ENERGY FOR EVER

इरेडा
IREDA

ONCE IREDA ALWAYS IREDA

(A Navratna CPSE)

अक्षय क्रांति

(ई-पत्रिका)

जुलाई - सितम्बर 2026 अंक



भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

इरेडा

ENERGY FOR EVER
इरेडा IREDA
ONCE IREDA ALWAYS IREDA
(A Navratna CPSE)

अक्षय क्रांति

संरक्षक

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक (वित्त) एवं अध्यक्ष एवं

प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)

मार्गदर्शक

श्री दीपक कुमार बारिक

कार्यपालक निदेशक (विधि एवं मानव संसाधन)

श्रीमती माला घोष चौधुरी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

श्री आलर कुल्लू , प्रबंधक (राजभाषा)

श्री अजय कुमार गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री रोहित कुमार साव, उप प्रबंधक (राजभाषा)

सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं सरकार अथवा इरेडा का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	पृष्ठ संख्या
1.	भारत की संस्कृति की शक्ति: शाश्वत मूल्य और वैश्विक प्रासंगिकता	लेख	01
2.	भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्रांति	लेख	03
3.	सर्वेषाम् ऊर्जम् : ऊर्जा तक सबकी पहुँच	लेख	06
4.	मन की बात	कविता	08
5.	वकालत : तारिखों का अनंत सफर	कविता	09
6.	नदी का वादा	लेख	10
7.	सुनहरे किले से लोंगेवाला तक: रेगिस्तान, रणभूमि और राजस्थानी जायकों की अविस्मरणीय यात्रा	लेख	12
8.	ग्रिड आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता व डिजिटल ट्विन के माध्यम से विद्युत नेटवर्क का सुदृढ़ीकरण	लेख	15
9.	मिशन लाइफ : पर्यावरण संरक्षण की ओर एक जन-आंदोलन	लेख	17
10.	दिखावों से परे जीवन	कविता	19
11.	नौकर की कमीज	लेख	20
12.	चांदनी चौक और मेरी सहेली	लेख	23
13.	श्वेत क्रांति से हरित ऊर्जा की ओर	लेख	25
14.	लगे रहना....	लेख	26
15.	भारत में नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण: अवसर, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा	लेख	28
16.	आज़ादी का जज़्बा: कल और आज	लेख	31
17.	**सचित्र गतिविधियां**		34

इरेडा

ENERGY FOR EVER
इरेडा
IREDA
ONCE IREDA ALWAYS IREDA
(A Navratna CPSE)

संदेश



डॉ. बिजय कुमार महान्ती
निदेशक (वित्त) एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)

प्रिय साथियो,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि *"अक्षय क्रांति"* के सितंबर 2026 अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। यह पत्रिका केवल हमारी राजभाषा हिंदी के संवर्धन का माध्यम ही नहीं है, बल्कि इरेडा परिवार की उपलब्धियों, प्रयासों, अनुभवों और विचारों को साझा करने का एक सशक्त मंच भी है।

आज भारत ऊर्जा परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। स्वच्छ, हरित एवं सतत विकास की दिशा में देश की प्रतिबद्धता को साकार करने में भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) अग्रणी भूमिका निभा रहा है। नवीकरणीय ऊर्जा की परियोजनाओं के वित्तपोषण के द्वारा इरेडा न केवल ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ बना रहा है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता है कि इरेडा में हिंदी पखवाड़ा 2026 का आयोजन अत्यंत उत्साह और व्यापक सहभागिता के साथ किया गया। इस अवसर पर विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं एवं जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें सभी इरेडा कर्मियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। यह सहभागिता इस बात का प्रमाण है कि हमारे संगठन में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता है। हिंदी पखवाड़ा 2026 की सफलता ने न केवल कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया है, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मक एवं बौद्धिक प्रतिभाओं को भी एक नया मंच प्रदान किया है।

हमारी यह सफलता हमारे कर्मठ, समर्पित और प्रतिभाशाली कर्मियों के अथक प्रयासों का परिणाम है। बदलते परिवेश में तकनीकी प्रगति, उत्कृष्ट कार्य संस्कृति, पारदर्शिता और ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाकर इरेडा ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी हम सभी मिलकर संगठन की प्रगति और राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्यों को नई गति प्रदान करेंगे।

राजभाषा हिंदी हमारे प्रशासनिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है। *"अक्षय क्रांति"* के माध्यम से कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिल रहा है तथा ज्ञान और अनुभवों के आदान-प्रदान को भी बल मिल रहा है। मैं सभी इरेडा कर्मियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका में अपने विचारों, लेखों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों के जरिए अपना योगदान देकर इसे और समृद्ध बनाएं।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लेखकों को और राजभाषा प्रभाग को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है *"अक्षय क्रांति"* का यह अंक सभी पाठकों के लिए उपयोगी, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाओं सहित।

इरेडा

ENERGY FOR EVER
इरेडा IREDA
ONCE IREDA ALWAYS IREDA
(A Navratna CPSE)

संदेश



श्री दीपक कुमार बारिक

कार्यपालक निदेशक (विधि एवं मानव संसाधन)

प्रिय साथियो,

इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका **"अक्षय क्रांति"** के जुलाई-सितंबर 2026 अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे संगठन की रचनात्मक ऊर्जा, बौद्धिक संपदा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतीक है।

इरेडा देश की ऊर्जा सुरक्षा, सतत विकास तथा हरित अर्थव्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। इस राष्ट्रीय दायित्व के निर्वहन में हमारे मानव संसाधन ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनकी प्रतिभा, समर्पण, नवोन्मेषी सोच तथा संगठनात्मक मूल्यों के प्रति निष्ठा ही इरेडा की निरंतर प्रगति का आधार है। इरेडा के दृष्टिकोण से सुशासन, पारदर्शिता, नैतिक कार्य संस्कृति, विधिक अनुपालन तथा कर्मचारी विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। एक सुदृढ़ संगठन वही होता है जो उत्कृष्ट व्यावसायिक उपलब्धियों के साथ-साथ ज्ञान-साझाकरण, सतत अधिगम और सकारात्मक कार्य परिवेश को भी समान महत्व देता है। "अक्षय क्रांति" इसी विचारधारा को सशक्त बनाने का माध्यम है।

यह पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचार, अनुभव, साहित्यिक अभिरुचियों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को साझा करने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही यह राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं संवर्धन की दिशा में संगठन के सामूहिक प्रयासों को भी प्रतिबिंबित करती है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित विविध लेख, कविताएँ, संस्मरण तथा ज्ञानवर्धक सामग्री पाठकों को प्रेरित करने के साथ-साथ उनके बौद्धिक क्षितिज का भी विस्तार करेगी। मैं इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों तथा इसके सफल प्रकाशन हेतु सहयोग प्रदान करने वाले प्रत्येक कर्मचारी को हार्दिक बधाई देता हूँ। आपकी सक्रिय सहभागिता ही इस पत्रिका की वास्तविक शक्ति है।

आइए, हम सभी उत्कृष्टता, नवाचार, विधिक एवं नैतिक मूल्यों तथा सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हुए इरेडा को नई उपलब्धियों की ओर अग्रसर करें।

इरेडा

ENERGY FOR EVER
इरेडा IREDA
ONCE IREDA ALWAYS IREDA
(A Navratna CPSE)

संदेश



माला घोष चौधुरी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

प्रिय सहकर्मियो,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका **"अक्षय क्रांति"** के जुलाई-सितंबर 2026 अंक के माध्यम से हम एक बार पुनः अपने विचारों, अनुभवों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों को साझा करने हेतु एक मंच पर एकत्रित हुए हैं।

इरेडा केवल नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के वित्तपोषण में अग्रणी संस्था ही नहीं है। बल्कि ज्ञान, नवाचार, सतत विकास तथा मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करने वाली एक सशक्त कार्य संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है। हमारी वास्तविक शक्ति हमारे कर्मियों की प्रतिभा, समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण में निहित है।मानव संसाधन विभाग का निरंतर प्रयास है कि प्रत्येक कर्मचारी को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाए जहाँ वह अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम विकास कर सके तथा संगठन की प्रगति में सार्थक योगदान दे सके। प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, कर्मचारी सहभागिता, कार्य-जीवन संतुलन तथा समावेशी कार्य संस्कृति को बढ़ावा देना हमारे प्रमुख उद्देश्यों में सम्मिलित है।

यह पत्रिका हमारे सहकर्मियों की साहित्यिक, बौद्धिक और सृजनात्मक प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। इसमें प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण, विचार और अनुभव न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि संगठन के भीतर आपसी संवाद, सहयोग और सांस्कृतिक समृद्धि को भी सुदृढ़ करते हैं। साथ ही, यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के संवर्धन और उसके प्रभावी प्रयोग की दिशा में हमारे सामूहिक प्रयासों को भी प्रतिबिंबित करती है।

मैं इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों तथा इसके सफल प्रकाशन में सहयोग देने वाले प्रत्येक कर्मचारी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रोचक सिद्ध होगा।

आइए, हम सभी मिलकर नवाचार, उत्कृष्टता और सतत विकास के अपने संकल्प को और अधिक सशक्त बनाते हुए इरेडा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाओं सहित।



पीयूष कुमार अरोडा
वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)

भारत की संस्कृति की शक्ति: शाश्वत मूल्य और वैश्विक प्रासंगिकता



संस्कृति किसी राष्ट्र की आत्मा होती है। यह केवल जीवन-पद्धति नहीं, बल्कि उसके विचार, ज्ञान, आचरण और आध्यात्मिक चेतना का समग्र रूप है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक जीवंत संस्कृतियों में से एक है, जिसने सहस्राब्दियों के उतार-चढ़ाव, आक्रमणों और परिवर्तनशील परिस्थितियों के बावजूद अपनी मौलिकता को सुरक्षित रखा है। इसकी शक्ति इसकी उदारता, समन्वयशीलता और मानव कल्याण की भावना में निहित है।

वसुधैव कुटुम्बकम्: वैश्विक दृष्टि का आधार

भारतीय संस्कृति का मूल दर्शन संपूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। महाउपनिषद् का प्रसिद्ध वाक्य:

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

भारतीय चिंतन की सार्वभौमिकता को व्यक्त करता है। यह संदेश आज के वैश्विक युग में और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है, जहाँ मानवता शांति, सहयोग और सह-अस्तित्व की खोज में है।

विविधता में एकता की अद्भुत शक्ति

भारत भाषाओं, धर्मों, परंपराओं और जीवन-शैलियों की विविधताओं से परिपूर्ण देश है। फिर भी यह विविधता विभाजन का नहीं, बल्कि एकता का आधार बनती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत को विभिन्न संस्कृतियों के संगम-स्थल के रूप में देखा, जबकि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी प्रसिद्ध कृति *'संस्कृति के चार अध्याय'* में भारतीय संस्कृति को विभिन्न जातियों और सभ्यताओं के समन्वय का परिणाम बताया है।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि यह बाहरी प्रभावों को आत्मसात करते हुए भी अपनी मूल पहचान बनाए रखती है। यही इसकी सबसे बड़ी जीवन-शक्ति है।

आध्यात्मिकता और कर्म का दर्शन

भारतीय संस्कृति मनुष्य को केवल भौतिक अस्तित्व नहीं मानती, बल्कि उसे असीम संभावनाओं से युक्त आत्मा के रूप में देखती है। इसी कारण यहाँ आध्यात्मिकता और नैतिकता को जीवन के केंद्र में स्थान मिला है।

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति की शक्ति को उसकी आध्यात्मिक चेतना में निहित बताया था। *श्रीमद्भगवद्गीता* का कर्मयोग जीवन के संघर्षों से पलायन नहीं, बल्कि कर्तव्यनिष्ठा, आत्मविश्वास और साहस का संदेश देता है। भारतीय संस्कृति व्यक्ति को आत्म-विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए भी प्रेरित करती है।

सहिष्णुता, अहिंसा और मानवता

भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण आधार सहिष्णुता और अहिंसा है। यहाँ केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि समस्त प्राणिजगत और प्रकृति के प्रति करुणा का भाव विद्यमान है। वृक्ष, नदियाँ, पर्वत और पशु-पक्षी भी आदर और संरक्षण के पात्र माने गए हैं। सम्राट अशोक ने अहिंसा और शांति के संदेश को शासन का आधार बनाया, जबकि महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को वैश्विक स्तर पर मानवीय संघर्षों के समाधान का प्रभावी माध्यम सिद्ध किया। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति आज भी विश्व को शांति और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखाती है।

पारिवारिक मूल्य और सामाजिक सुदृढ़ता

भारतीय समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसका पारिवारिक और सामाजिक ढाँचा है। *"मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव"* जैसे आदर्श हमारी संस्कृति के मूल संस्कार हैं। परिवार, समाज और परस्पर सहयोग की भावना व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है।

संयुक्त परिवार, सामूहिक उत्सव और सामाजिक सहभागिता भारतीय जीवन को भावनात्मक मजबूती देते हैं। यही कारण है कि भारतीय समाज में संबंधों, पारस्परिक सहयोग और सामुदायिक जीवन को विशेष महत्व प्राप्त है।

निष्कर्ष: विश्व के लिए एक प्रेरक मार्ग

भारतीय संस्कृति की वास्तविक शक्ति उसकी प्राचीनता में नहीं, बल्कि उसकी निरंतर प्रासंगिकता में है। यह संस्कृति विज्ञान और आध्यात्मिकता, परंपरा और आधुनिकता, तथा व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करती है। आर्यभट्ट, सुश्रुत, चरक और वराहमिहिर जैसे महान विद्वानों ने यह सिद्ध किया कि भारतीय परंपरा ज्ञान और नवाचार की भी वाहक रही है।

आज जब विश्व संघर्ष, असहिष्णुता और मानसिक अशांति जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब भारत की समन्वयवादी, उदार और सर्वसमावेशी संस्कृति मानवता के लिए आशा का प्रकाश-स्तंभ बन सकती है। भारतीय संस्कृति का अंतिम लक्ष्य केवल राष्ट्र की प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण की भावना है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।"

इसी सार्वभौमिक संदेश में भारत की सांस्कृतिक शक्ति, उसकी वैश्विक प्रासंगिकता और उसके उज्ज्वल भविष्य का सार निहित है।

****

भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्रांति

नवीकरणीय विस्तार से ग्रिड स्थिरता तक भारत की हरित ऊर्जा यात्रा



ललित कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)



भूमिका

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक को वैश्विक ऊर्जा परिवर्तन का दौर माना जाएगा, और भारत इस परिवर्तन के अग्रणी देशों में शामिल है। एक दशक पहले तक सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सीमित उपस्थिति रखने वाला भारत आज दुनिया की प्रमुख स्वच्छ ऊर्जा अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। यह उपलब्धि केवल क्षमता वृद्धि की कहानी नहीं, बल्कि विकास और पर्यावरण संरक्षण के संतुलन की एक सफल रणनीति का परिणाम है।

हालाँकि, ऊर्जा परिवर्तन का अगला चरण और भी चुनौतीपूर्ण है। अब उद्देश्य केवल अधिक मेगावाट जोड़ना नहीं, बल्कि स्वच्छ ऊर्जा को विश्वसनीय, किफायती और स्थिर बनाना है। यही भारत की ऊर्जा क्रांति के दूसरे अध्याय की शुरुआत है।

जलवायु संकट और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

हाल के वर्षों में नवीकरणीय ऊर्जा में तेज निवेश के कारण सबसे खराब जलवायु परिदृश्य RCP8.5 को अप्रासंगिक माना जाने लगा है। इससे यह संकेत मिलता है कि वैश्विक समुदाय ने उत्सर्जन नियंत्रण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। फिर भी पृथ्वी के औसत तापमान में लगभग 2.8 डिग्री सेल्सियस वृद्धि की आशंका बनी हुई है, जो पेरिस समझौते के 1.5 डिग्री लक्ष्य से काफी अधिक है।

भारत के लिए यह चिंता का विषय इसलिए भी है क्योंकि गर्मी की लहरें, अनियमित वर्षा, बाढ़ और हिमालयी ग्लेशियरों का पिघलना पहले से ही सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ पैदा कर रहा है। इसलिए स्वच्छ ऊर्जा केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि विकास और सुरक्षा का भी प्रश्न बन चुकी है।

भारत की नवीकरणीय ऊर्जा उपलब्धियाँ

भारत ने पिछले दशक में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। अप्रैल 2026 तक देश की स्थापित सौर क्षमता 154 गीगावाट से अधिक तथा कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता लगभग 279 गीगावाट तक पहुँच चुकी है। सोलर पार्क, उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI), ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर तथा घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने वाली नीतियों ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

साथ ही, सौर मॉड्यूल, पवन टरबाइन और अन्य उपकरणों के स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि ने भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता को मजबूत किया है। इससे न केवल ऊर्जा सुरक्षा बढ़ी है, बल्कि रोजगार और निवेश के नए अवसर भी सृजित हुए हैं।

सौर और पवन ऊर्जा: परिवर्तन की दो प्रमुख शक्तियाँ

सौर ऊर्जा भारत के हरित संक्रमण की धुरी बन चुकी है। बड़े सौर पार्कों के साथ-साथ रूफटॉप सौर प्रणालियों और 'पीएम सूर्य घर' जैसी योजनाओं ने स्वच्छ ऊर्जा को आम नागरिक तक पहुँचाया है। हालांकि सौर ऊर्जा की सबसे बड़ी चुनौती इसकी अनियमितता है। दिन में उत्पादन अधिक होता है, जबकि शाम होते ही यह लगभग समाप्त हो जाता है।

यहीं पवन ऊर्जा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लगभग 52 गीगावाट स्थापित क्षमता के साथ पवन ऊर्जा भारत की दूसरी प्रमुख नवीकरणीय ऊर्जा है। गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान, कर्नाटक और महाराष्ट्र इसके प्रमुख केंद्र हैं। पवन ऊर्जा का उत्पादन अक्सर उन समयों में बढ़ता है जब सौर ऊर्जा कम हो जाती है। यही कारण है कि सौर-पवन हाइब्रिड परियोजनाएँ भविष्य की ऊर्जा रणनीति का आधार बन रही हैं।

स्वास्थ्य और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव

नवीकरणीय ऊर्जा के लाभ केवल कार्बन उत्सर्जन में कमी तक सीमित नहीं हैं। जीवाश्म ईंधनों के उपयोग से उत्पन्न वायु प्रदूषण हर वर्ष लाखों लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। स्वच्छ ऊर्जा के विस्तार से प्रदूषण कम होता है, अस्पतालों पर दबाव घटता है और नागरिकों की जीवन गुणवत्ता बेहतर होती है।

इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन से होने वाले चरम मौसम, श्रम उत्पादकता में कमी और कृषि पर प्रतिकूल प्रभावों को भी कम किया जा सकता है। इस दृष्टि से नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक निवेश भी है।

आर्थिक अवसर और रोजगार

नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए नए अवसर लेकर आया है। अनुमान है कि 2030 तक यह क्षेत्र लाखों रोजगार उत्पन्न कर सकता है। स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाएँ निर्माण, संचालन, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में व्यापक अवसर प्रदान कर रही हैं।

इसके साथ ही, हरित ऊर्जा भारत के निर्यातोन्मुख उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने में भी सहायक हो सकती है। वैश्विक बाजारों में बढ़ते कार्बन मानकों के बीच सस्ती और स्वच्छ बिजली भारतीय उद्योगों को अधिक प्रतिस्पर्धी बना सकती है। किसानों के लिए बायोचार और अन्य हरित पहलों से आय बढ़ाने तथा कार्बन उत्सर्जन कम करने की नई संभावनाएँ भी खुल रही हैं।

अगली चुनौती: भंडारण और ग्रिड स्थिरता

नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार के साथ सबसे बड़ी चुनौती ग्रिड स्थिरता की है। जब उत्पादन मौसम और समय पर निर्भर हो, तब ऊर्जा उपलब्धता को चौबीसों घंटे सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है। इसलिए बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) और पंप्ड स्टोरेज परियोजनाओं का महत्व तेजी से बढ़ रहा है।

आने वाले वर्षों में भारत को विशाल भंडारण क्षमता विकसित करनी होगी। इसके अलावा, ट्रांसमिशन नेटवर्क का विस्तार, भूमि अधिग्रहण में सुधार, आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती और उन्नत ग्रिड प्रबंधन भी समान रूप से आवश्यक हैं। स्पष्ट है कि अब ऊर्जा नीति का फोकस केवल क्षमता वृद्धि से हटकर विश्वसनीयता और लचीलेपन पर केंद्रित हो रहा है।

वित्तीय आधार और निवेश की आवश्यकता

ऊर्जा परिवर्तन की सफलता पर्याप्त वित्तीय संसाधनों पर निर्भर करती है। भारत को अपने जलवायु और ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आने वाले वर्षों में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता होगी। हरित बॉन्ड, हरित ऋण और जलवायु वित्त ढाँचे इस दिशा में महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरे हैं।

फिर भी एक स्पष्ट और विश्वसनीय "क्लाइमेट फाइनेंस टैक्सोनॉमी" की आवश्यकता बनी हुई है, जिससे हरित निवेश की परिभाषा स्पष्ट हो सके और निवेशकों का भरोसा बढ़े। सार्वजनिक तथा निजी पूंजी के प्रभावी संयोजन से ही ऊर्जा परिवर्तन को गति मिल सकेगी।

निष्कर्ष: क्षमता से विश्वसनीयता की ओर

भारत ने स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है, लेकिन असली परीक्षा अब शुरू होती है। चुनौती यह नहीं कि देश दिन में कितनी बिजली पैदा कर सकता है, बल्कि यह कि वह सूर्यास्त के बाद भी घरों, उद्योगों, अस्पतालों और परिवहन तंत्र को कितनी विश्वसनीय ऊर्जा उपलब्ध करा सकता है।

भारत की ऊर्जा क्रांति का अगला चरण मेगावाट बढ़ाने नहीं, बल्कि ऊर्जा को स्थिर, लचीला और सर्वसुलभ बनाने का है। यदि देश भंडारण, ग्रिड आधुनिकीकरण और हरित वित्त के क्षेत्रों में समान गति से आगे बढ़ता है, तो वह न केवल अपने जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करेगा, बल्कि विकासशील विश्व के लिए स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा परिवर्तन का एक आदर्श मॉडल भी प्रस्तुत करेगा।

सौर और पवन ऊर्जा ने परिवर्तन की दिशा दिखा दी है; अब चुनौती उनकी ऊर्जा को हर समय उपलब्ध कराने की है।

****



रोहित खत्री
वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)

सर्वेषाम् ऊर्जम् : ऊर्जा तक सबकी पहुँच

ऊर्जा केवल बिजली या ईंधन का विषय नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और मानवीय गरिमा से जुड़ा विकास का आधार है। एक बल्ब केवल अंधकार दूर नहीं करता, बल्कि बच्चों की पढ़ाई, किसानों की सिंचाई और छोटे उद्यमों की आजीविका का मार्ग भी प्रशस्त करता है। इसी दृष्टिकोण को "सर्वेषाम् ऊर्जम्" अर्थात "सभी के लिए ऊर्जा" का सिद्धांत अभिव्यक्त करता है,



जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि ऊर्जा संक्रमण की यात्रा में कोई भी व्यक्ति या समुदाय पीछे न रह जाए। वैश्विक स्तर पर करोड़ों लोग बिजली से वंचित हैं और बड़ी आबादी खाना पकाने के लिए प्रदूषणकारी ईंधनों पर निर्भर है। इसका प्रभाव केवल ऊर्जा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक समानता पर भी पड़ता है। विशेष रूप से महिलाएं और बच्चे धुएँ वाले ईंधनों के दुष्प्रभावों का अधिक सामना करते हैं। इस प्रकार ऊर्जा तक पहुंच सतत विकास के लगभग सभी लक्ष्यों की आधारशिला है।

पिछले एक दशक में सौर ऊर्जा की लागत में भारी गिरावट आई है और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत कई मामलों में पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से अधिक किफायती साबित हो रहे हैं। वास्तविक चुनौती वित्तपोषण की है। विकासशील देशों में नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए पूंजी की लागत विकसित देशों की तुलना में काफी अधिक है। परिणामस्वरूप, जहां ऊर्जा की आवश्यकता सबसे अधिक है, वहीं परियोजनाओं को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही पूंजीगत असमानता ऊर्जा असमानता को जन्म देती है।

भारतीय प्रतिमान

इस संदर्भ में भारत का अनुभव महत्वपूर्ण है। सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण के बाद अब भारत का ध्यान केवल बिजली कनेक्शन प्रदान करने पर नहीं, बल्कि स्वच्छ, विश्वसनीय और किफायती ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर है। विशेष रूप से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा आधारित समाधान कई मामलों में पारंपरिक ग्रिड विस्तार की तुलना में अधिक आर्थिक सिद्ध हुए हैं। यही कारण है कि भारत ने विकेन्द्रीकृत ऊर्जा प्रणालियों को बढ़ावा देने पर बल दिया है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। पिछले दशक में देश की अक्षय ऊर्जा क्षमता में कई गुना वृद्धि हुई है और गैर-जीवाश्म स्रोत अब स्थापित विद्युत क्षमता का प्रमुख हिस्सा बन चुके हैं। यह उपलब्धि दर्शाती है कि सही नीति और वित्तीय सहयोग के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा का विस्तार तेज गति से किया जा सकता है।

ऊर्जा पहुंच को बढ़ाने में दो प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों की विशेष भूमिका रही है। पहला, **पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना**, जिसके माध्यम से लाखों परिवार अपनी छतों पर सौर संयंत्र स्थापित कर रहे हैं। इससे न केवल बिजली बिल कम हुए हैं, बल्कि कई परिवार अतिरिक्त बिजली बेचकर आय भी अर्जित कर रहे हैं। दूसरा, **पीएम-कुसुम योजना**, जिसके अंतर्गत बड़ी संख्या में सौर सिंचाई पंप स्थापित किए गए हैं। इससे किसानों की डीजल पर निर्भरता कम हुई है और उनकी आय के नए अवसर भी बने हैं। इन योजनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उपभोक्ता केवल ऊर्जा प्राप्तकर्ता नहीं रह जाता, बल्कि ऊर्जा उत्पादन में भी सहभागी बन जाता है।

इन कार्यक्रमों की सफलता के पीछे मजबूत वित्तीय ढांचा भी है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से सब्सिडी सीधे लाभार्थियों तक पहुंचाई जा रही है। इसके अतिरिक्त रियायती ब्याज दरों पर बिना संपार्श्विक वाले ऋण उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे मध्यम और निम्न आय वाले परिवार भी स्वच्छ ऊर्जा अपनाने में सक्षम हो रहे हैं। समर्पित सार्वजनिक वित्तीय संस्थाएं भी ऐसे क्षेत्रों और समुदायों तक वित्त पहुंचा रही हैं जहां पारंपरिक वित्तीय संस्थानों की पहुंच सीमित रही है।

फिर भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। विकेन्द्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं, जैसे मिनी-ग्रिड, छोटे रूफटॉप संयंत्र और सौर सिंचाई परियोजनाएं, अक्सर वाणिज्यिक वित्त आकर्षित नहीं कर पातीं। इसके पीछे परियोजनाओं का छोटा आकार, सीमित ऋण इतिहास और निम्न आय वर्ग पर निर्भरता जैसे कारण हैं। दूसरी ओर, निजी निवेशक स्थिर नकदी प्रवाह और कम जोखिम वाली परियोजनाओं को प्राथमिकता देते हैं। परिणामस्वरूप ऊर्जा की आवश्यकता रखने वाले समुदायों और उपलब्ध पूंजी के बीच एक अंतर बना रहता है। इस अंतर को पाटने के लिए विश्व स्तर पर नवाचारी वित्तीय मॉडल विकसित किए जा रहे हैं। मिश्रित वित्त (ब्लेंडेड फाइनेंस), आंशिक ऋण गारंटी और प्रथम-हानि निवेश जैसे उपकरण जोखिम को विभिन्न स्तरों पर विभाजित कर निवेशकों का विश्वास बढ़ाते हैं। इन मॉडलों का उद्देश्य सीमित सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग करके बड़ी मात्रा में निजी पूंजी को आकर्षित करना है। साथ ही, परियोजनाओं का समूहन और मानकीकरण भी वित्त प्राप्ति की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं।

ऐसे परिवेश में भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) जैसी संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। पिछले चार दशकों में इरेडा ने केवल ऋणदाता के रूप में ही नहीं, बल्कि हरित वित्त के मार्गदर्शक और बाजार-निर्माता के रूप में कार्य किया है। इरेडा ने नई प्रौद्योगिकियों और उभरते क्षेत्रों में वित्त उपलब्ध कराकर निवेशकों का विश्वास मजबूत किया है तथा नीति और पूंजी के बीच प्रभावी सेतु का कार्य किया है। आज प्रश्न यह नहीं रह गया है कि स्वच्छ ऊर्जा किफायती है या नहीं, बल्कि यह है कि पूंजी को किस प्रकार संरचित किया जाए ताकि स्वच्छ ऊर्जा उन समुदायों तक भी पहुंच सके जो अब तक विकास की मुख्यधारा से दूर रहे हैं।

अंततः, ऊर्जा तक सार्वभौमिक पहुंच केवल तकनीकी या आर्थिक लक्ष्य नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समावेशी विकास का आधार है। जब स्वच्छ और विश्वसनीय ऊर्जा हर घर तक पहुंचेगी, तभी विकास के अवसर भी समान रूप से उपलब्ध होंगे। "सर्वेषाम् ऊर्जम्" का वास्तविक अर्थ यही है कि विकास और प्रकाश दोनों का लाभ समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे।

****

मन की बात



गुंजन महानी
(प्रबंधक- आंतरिक लेखापरीक्षा)

मंच सजा है नेता जी का और उनके भाषणों में
सभी चीजों की बहार ही बहार है।
भूख और पानी से जूझ रही जनता का मत पूछो क्या हाल है?
गरीबों को गले लगा कर जो नेता जी मंच पर फोटो खिंचवाते हैं,
धरातल पर न जाने यह प्राणी कहां गायब हो जाते हैं?
देश की तरक्की केवल चंद्रमा तक ही ना आंकी जाए,
एकबार नज़र अपनी थोड़ी धरातल पर भी घूमा लिया जाए।
आज देश का युवा हताश और परेशान है,
बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और पेपर लीक ने ले ली,
न जाने कितने लोगों की जान है।
विकसित भारत का अब सपना हमारा तभी पूरा होगा,
जब देश का हर युवा देश के उत्थान में अपना सहयोग देगा।
"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" का नारा है बहुत महान,
पर आज भी निर्भया जैसी हजारों बच्चियाँ क्यों गवां रही हैं अपनी जान है?
और कब तक चलता रहेगा मानसिक और शारीरिक शोषण का चक्र?
दहेज और भ्रूण हत्या का काला धब्बा समाज से कब मिटेगा?
ऑपरेशन सिन्दूर ने दी है महिला सशक्तिकरण को नई पहचान,
और भारत की महिलाएं बन गई हैं भारत की आन, बान और शान।
हमारे देश का परचम विश्व में तभी लहराएगा,
जब महिलाओं को शोषण मुक्त समाज मिल पायेगा।
विश्व गुरु बन ने की दौड़ में हम तभी आगे बढ़ पायेंगे,
जब देश की आजादी का असली मतलब समझ जाएंगे।
आरोप-प्रत्यारोप का चलन अब बंद करना होगा,
और अब मिल कर निकलना होगा गंभीर मुद्दे का कुछ हल।
सुंदर, समृद्ध और खुशहाल भारत का सपना जल्दी पूरा होगा,
जब सब मिलकर यह निश्चय कर के हमें आगे बढ़ना ही होगा।

****



दिव्यांशु दुबे
प्रबंधक (विधि)

वकालत – तारीख़ों का अनंत सफ़र

काले कोट में निकले सुबह,
हाथ में फाइलों का भार,
दिल में था—"आज फैसला होगा!"
कोर्ट बोला—"अगली तारीख़,
सरकार!"

मुवक्किल पूछे—"जीतेंगे ना?"
वकील कहे—"केस है दमदार!"
फिर धीरे से मुंशी को बोले—
"पहले ढूँढो, फाइल है किसके पास
यार!"

कहीं स्टे है, कहीं रिप्लाई,
कहीं रिजॉइंडर की तैयारी,
एक एफिडेविट खत्म न हो,
आ जाए नई आई.ए. की बारी।

जज साहब बोले—"ब्रीफ बताइए,"
वकील खोले पन्ने चार हज़ार,
"मिलॉर्ड, तथ्य बस दो मिनट के हैं..."
पीछे से आवाज़—"लंच के बाद,
सरकार!"

वादी बोले—"न्याय चाहिए,"
प्रतिवादी—"सब आरोप बेकार!"
दोनों की बहस के बीच बेचारा,
लीगल डिपार्टमेंट करे फाइलें
तैयार।

कभी नोटिस, कभी समन,
कभी कैविएट का पहरा,
एक मुकदमा खत्म हुआ नहीं,
दूसरे ने दरवाज़ा घेरा।

सीनियर बोले—"स्ट्रॉन्ग केस है!"
जूनियर बोले—"रिसर्च जारी है,"
क्लाइंट बोले—"रिजल्ट कब
आएगा?"
सब बोले—"मैटर सब-ज्यूडिस है
भाई!"

****

सुप्रीम कोर्ट से एन.सी.एल.टी. तक,
डी.आर.टी. से आर्बिट्रेशन की राह,
हर फोरम की अपनी भाषा,
हर ऑर्डर में नई सलाह।

और लिटिगेशन की दुनिया में,
एक सत्य है सबसे महान—
केस छोटा हो या बड़ा,
क्रोनोलॉजी रखो तैयार श्रीमान!

ना तलवार, ना कोई ढाल,
बस प्रिसीडेंट का हथियार,
काले कोट की यही कहानी—
तर्क हमारा, कानून आधार।

जीत मिले तो—"जस्टिस प्रिवेल्ड!"
हार मिले—"अपील का अधिकार!"
और तारीख़ अगर फिर मिल जाए,
मुस्कुरा के बोलो हर बार—

"मिलॉर्ड... अगली तारीख़ पर
हम होंगे पूरी तरह तैयार!



रोमेश कुमार गुप्ता
प्रबंधक - वित्त एवं लेखा विभाग

नदी का वादा

पहाड़ों की गोद में बसा गाँव 'स्वर्णग्राम', हर शाम में सूरज ढलते ही सन्नाटे में डूब जाता था। बच्चे दिन में गाँव के इकलौते सरकारी स्कूल में पढ़ते, पर घर लौटते ही उनकी पढ़ाई अवकाश पर चली जाती। मास्टर जी—विश्वनाथ जी—तीस वर्ष से इसी स्कूल में पढ़ा रहे थे, और उतने ही बरसों से देखते आए थे कि उनके होशियार से होशियार छात्र भी शाम होते ही किताब बंद कर सो जाते, क्योंकि घर पर पढ़ने लायक रोशनी ही नहीं होती थी।

गाँव से थोड़ा हटकर एक छोटा-सा स्वास्थ्य उपकेंद्र भी था, जहाँ नर्स सुनीता दीदी अकेले ही आसपास के तीन गाँवों का बोझ संभालती थीं। रात में प्रसव-पीड़ा या साँप के डसे मरीज़ आने पर उन्हें मोमबत्ती और टॉर्च के सहारे ही काम चलाना पड़ता। गाँव वाले अक्सर कहते, "सुनीता दीदी के हाथों में जादू है, बस भगवान थोड़ी रोशनी और भेज दे।"

गाँव के ठीक नीचे एक तेज़ बहाव वाली पहाड़ी नदी गुज़रती थी, जिसे गाँव वाले 'सुवर्णधारा' कहकर पुकारते थे। बरसों पहले किसी सरकारी अफ़सर ने यहाँ एक छोटी जलविद्युत परियोजना का सपना दिखाया था, पर फ़ाइलें दफ़्तरों में दबी रहीं, और सपना काग़ज़ पर ही अटका रह गया।

इस बार जब वह प्रस्ताव दोबारा भेजा गया, तो उसकी जाँच का ज़िम्मा एक युवा अधिकारी, अनन्या के हिस्से आया। दिल्ली में बैठकर उसने महीनों तकनीकी रिपोर्टें पढ़ी थीं, पर आज पहली बार वह उस जगह खड़ी थी जिसे अब तक सिर्फ़ काग़ज़ों में जाना था। नदी की गरजती आवाज़ सुनकर लगा जैसे वह किसी बहुत पुराने वादे को निभाने के लिए बेताब हो।

गाँव पहुँचकर अनन्या सबसे पहले स्वास्थ्य उपकेंद्र गई। सुनीता दीदी ने पिछली सर्दी का एक किस्सा सुनाया, कैसे आधी रात एक महिला को प्रसव-पीड़ा उठी थी, बारिश की वजह से शहर ले जाना मुमकिन नहीं था, और मोमबत्ती की लौ बार-बार बुझ जाती थी। उस रात हमने अंधेरे में ही डिलीवरी करवाई, उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, "भगवान की दया रही कि माँ-बच्चा ठीक रहे। पर हर बार किस्मत साथ नहीं देती।"

इसके बाद अनन्या मास्टर जी से मिलने स्कूल पहुँची, जो लालटेन की मद्धम लौ में अगले दिन का पाठ तैयार कर रहे थे। अनन्या ने पूछा, "बच्चे शाम को घर पर कैसे पढ़ते हैं?" मास्टर जी मुस्कुराए, "बेटा, यहाँ रोशनी उधार की चीज़ है। घर लौटते ही अंधेरा उनका सबसे बड़ा दुश्मन बन जाता है। यह नदी, जो नीचे गरजती रहती है, उसकी ताक़त देखकर लगता है कि जितनी बिजली यह अकेली बना सकती है, उतनी तो पूरे ज़िले को रोशन कर दे। पर हमारे भाग्य में शायद वह उजाला लिखा ही नहीं।" उनकी आवाज़ में शिकायत नहीं, बस एक थकी हुई उम्मीद थी। अनन्या के भीतर कुछ हिल गया, उसके आँकड़ों को आज पहली बार एक चेहरा मिल गया।

****

अगली सुबह अनन्या नदी के किनारे परियोजना स्थल का निरीक्षण करने पहुँची। साथ थी चौदह वर्ष की कीर्ति, मास्टर जी की सबसे होशियार छात्रा, उसने उत्सुकता से पूछा, "दीदी, अगर यहाँ बिजलीघर बन गया, तो क्या मैं घर पर रात को भी पढ़ सकूँगी? मुझे डॉक्टर बनना है, पर स्कूल से लौटते ही मेरी किताबें बंद हो जाती हैं।"

अनन्या ने नदी की ओर देखा, फिर कीर्ति की आँखों में झाँका—वही चमक थी जो शायद हर उस बच्चे में होती है जिसे बस एक मौका चाहिए। उसने वादा तो नहीं किया, क्योंकि जानती थी कि ***फ़ैसले फ़ाइलों से होते हैं, भावनाओं से नहीं।*** पर यह ज़रूर तय कर लिया कि इस बार रिपोर्ट में सिर्फ़ मेगावाट और लागत का हिसाब नहीं, बल्कि यह भी लिखेगी कि यह परियोजना किन ज़िंदगियों को छू सकती है।

दिल्ली लौटकर अनन्या ने अपनी रिपोर्ट में तकनीकी व्यवहार्यता के साथ यह भी जोड़ा कि यह परियोजना गाँव के स्वास्थ्य उपकेंद्र और घर-घर की पढ़ाई को कैसे बदल सकती है। कई बैठकों और महीनों की प्रक्रिया के बाद परियोजना को मंज़ूरी मिल गई, और कुछ महीनों में गाँव में टरबाइन लगाई गई, तार बिछाए गए, खंभे खड़े किए गए।
आख़िरकार वह दिन आया जब पहली बार टरबाइन ने घूमना शुरू किया। स्वर्णग्राम की उस सर्दी की पहली शाम कुछ अलग थी। घर-घर की खिड़कियों से उजली रोशनी छनकर बाहर आ रही थी। कीर्ति पहली बार बिना आँखें मींचे किताब पढ़ रही थी। अगले दिन उसने मास्टर जी को बताया, "कल रात मैंने पूरा अध्याय ख़त्म कर लिया, आँखें भी नहीं दुखीं!"
उसी सर्दी एक रात सुनीता दीदी के उपकेंद्र में फिर एक महिला प्रसव-पीड़ा लेकर पहुँची। पर इस बार मोमबत्ती नहीं जलानी पड़ी। कमरे में तेज़, स्थिर रोशनी थी। सुनीता दीदी ने बाद में कहा, "इस बार मेरे हाथ नहीं काँपे, रोशनी ने साथ नहीं छोड़ा।" माँ-बच्चा दोनों सुरक्षित रहे, और यह ख़बर गाँव में घर-घर मिठाई की तरह बँट गई।
अनन्या जब अगली बार गाँव पहुँची, तो नदी अब भी गरज रही थी, पर अब उसकी गर्जना में एक ठहराव भी था, जैसे कोई पुराना वादा आख़िरकार पूरा हो गया हो। उसे समझ आया कि जिसे वह 'प्रोजेक्ट अप्रेज़ल' कहती आई थी, दरअसल वह किसी की अधूरी पढ़ाई और अधूरी साँसों को पूरा करने का ज़रिया था।

नदियाँ सदियों से बहती आई हैं, पर जब उनकी धारा किसी बच्चे की किताब तक और किसी माँ की डिलीवरी तक रोशनी पहुँचा दे, तभी वह असली विकास कहलाता है। अक्षय ऊर्जा केवल टरबाइन और पैनल नहीं, बल्कि उन अनगिनत अधूरे वादों को पूरा करने का माध्यम है, जो बरसों से अंधेरे में दबे रह गए थे।

****

****



हुनर मेहता
प्रबंधक (सीएसआर)

सुनहरे किले से लोंगेवाला तक: रेगिस्तान, रणभूमि और राजस्थानी जायकों की अविस्मरणीय यात्रा

ह्वेन सांग की सी-यु-की हो या इब्न बतूता की रिहला, महान यात्रा-वृत्तांतों ने सदियों से यह बताया है कि किसी भी स्थान की वास्तविक पहचान उसके लोगों, उसकी संस्कृति और उसके भोजन में छिपी होती है। मेरा भी मानना है कि किसी क्षेत्र को समझने का सबसे सुंदर और सहज माध्यम वहाँ का खान-पान है। भोजन केवल स्वाद नहीं होता, वह इतिहास, परंपरा और स्थानीय जीवन का जीवंत दस्तावेज भी होता है।

सौभाग्य से, घूमने-फिरने और नई जगहों को जानने का यह शौक मुझे अपने माता-पिता से विरासत में मिला। हमारा प्रयास हमेशा यही रहा कि जहाँ भी जाएँ, वहाँ की स्थानीय संस्कृति में पूरी तरह रच-बस जाएँ। यद्यपि शाकाहारी होने के कारण मेरी अपनी कुछ सीमाएँ रही हैं, फिर भी मैंने हर यात्रा में स्थानीय स्वाद, परंपराओं और अनुभवों को आत्मसात करने की पूरी कोशिश की है। पिछले एक वर्ष में मुझे देश की कई लोकप्रिय और आकर्षक जगहों की यात्रा करने का अवसर मिला। हर स्थान ने अपने आतिथ्य, संस्कृति और यादगार अनुभवों से मन को समृद्ध किया। आज मैं आपको ऐसी ही एक अविस्मरणीय यात्रा पर ले चलना चाहता हूँ, जो इतिहास, देशभक्ति, स्थापत्य कला और स्वादिष्ट व्यंजनों का अद्भुत संगम है।

हाल ही में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जब पूरा देश आज़ादी का उत्सव मना रहा था, तब मेरे मन में सबसे पहले जैसलमेर और लोंगेवाला बॉर्डर की यात्रा की स्मृतियाँ ताज़ा हो उठीं। इस यात्रा ने मुझे केवल राजस्थान की संस्कृति से ही परिचित नहीं कराया, बल्कि भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान के प्रति मेरे मन में और अधिक सम्मान भी भर दिया। यात्रा से पहले मुझे यह ज्ञात नहीं था कि वर्ष 1997 में प्रदर्शित प्रसिद्ध फिल्म बॉर्डर वास्तव में लोंगेवाला की ऐतिहासिक लड़ाई पर आधारित थी। 1971 के भारत-पाक युद्ध में मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी के नेतृत्व में मात्र 120 भारतीय सैनिकों ने हजारों हमलावर सैनिकों का डटकर सामना किया था। यह वीरता और अदम्य साहस की ऐसी कहानी है, जो आज भी हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा कर देती है।



अपनी भव्यता और स्वर्णिम आभा के कारण जैसलमेर को 'गोल्डन सिटी' कहा जाता है। 'जैसल' राजा का नाम है और 'मेर' का अर्थ पर्वत। यह शहर दुनिया के उन विरले नगरों में शामिल है जहाँ आज भी एक जीवंत किला (Living Fort) मौजूद है। जैसलमेर किले की प्राचीरों के भीतर आज भी हजारों लोग रहते हैं, व्यापार करते हैं और अपनी संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। हिंदू राजपूत शासक रावल जैसल द्वारा निर्मित इस विशाल किले के भीतर 12वीं से 16वीं शताब्दी के अद्भुत जैन मंदिर स्थित हैं, जो भारतीय स्थापत्य कला की उत्कृष्ट मिसाल प्रस्तुत करते हैं। किले की सँकरी गलियाँ, पीले बलुआ पत्थर से निर्मित इमारतें और दूर-दूर तक फैली सुनहरी चमक शहर को एक अलग ही पहचान देती हैं। यदि आप इस किले को आराम से देखना चाहते हैं, तो कम-से-कम तीन घंटे का समय अवश्य निकालें। मौसम अनुकूल हो तो इसकी चढ़ाई और गलियों में घूमने का अनुभव और भी सुखद हो जाता है।

इतिहास और स्थापत्य की इस रोमांचक सैर के बाद भूख लगना स्वाभाविक था। मैं स्थानीय भोजन का वास्तविक स्वाद चखना चाहता था। ऐसे अवसरों पर सबसे अच्छा मार्गदर्शन स्थानीय लोगों से ही मिलता है। किले के भीतर खेल रहे कुछ बच्चों से मैंने पूछा कि यहाँ की सबसे प्रसिद्ध मिठाई कौन-सी है और वह कहाँ मिलेगी। सभी का जवाब एक ही था—किले की तलहटी में स्थित धनराज रणमल भाटिया की दुकान का प्रसिद्ध गोठुआ लड्डू। देसी घी, बेसन और मावे से तैयार यह लड्डू इतना मुलायम और स्वादिष्ट था कि उसकी मिठास आज भी स्मृतियों में बनी हुई है। वहाँ से मैंने प्रसिद्ध हींग भुजिया भी खरीदी। हींग की तीखी सुगंध और अनोखा स्वाद ऐसा था कि पैकेट खत्म होने का पता ही नहीं चला।

कहते हैं कि भारत में हर बारह किलोमीटर पर भाषा और भोजन बदल जाता है। एक गुजराती होने के नाते राजस्थान की पारंपरिक केर-सांगरी की सब्जी ने विशेष रूप से मेरा ध्यान आकर्षित किया। मरुस्थलीय क्षेत्र की यह प्रसिद्ध डिश मसालों, खट्टेपन और देसी स्वाद का अनोखा संगम है। हमारे गुजरात में भी केर का उपयोग अचार बनाने में होता है, इसलिए इसका स्वाद कहीं-न-कहीं परिचित भी लगा और नया भी। जैसलमेर का बाज़ार भी अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। विशेष रूप से कैमल लेदर से बने उत्पादों की यहाँ लंबी श्रृंखला देखने को मिलती है। पर्स, बेल्ट, वॉलेट, बैग और पारंपरिक हस्तशिल्प वस्तुएँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। स्थानीय कारीगरों की मेहनत और कौशल इन उत्पादों में साफ दिखाई देता है।



लेकिन इस यात्रा का सबसे भावनात्मक पड़ाव था लोंगेवाला बॉर्डर। दिल्ली लौटते समय भी मेरी आँखों के सामने थार मरुस्थल के वे बंकर, दूर तक फैली रेत और तपती धूप के दृश्य घूमते रहे। गर्मियों में 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँचने वाली भीषण गर्मी में हमारे सैनिक अपने परिवारों से दूर रहकर देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। उनके त्याग, समर्पण और निस्वार्थ सेवा का ऋण वास्तव में कभी चुकाया नहीं जा सकता।

जोधपुर से जैसलमेर और फिर लोंगेवाला तक की यह पूरी यात्रा सड़क मार्ग से हुई। राजस्थान के आधुनिक और सुव्यवस्थित राजमार्ग इस सफर को बेहद आरामदायक बनाते हैं। यदि आप इतिहास, संस्कृति, प्रकृति और रोमांच का अनूठा संगम एक साथ अनुभव करना चाहते हैं, तो इस मार्ग की रोड ट्रिप अवश्य करें। हाँ, साथ में कुछ खाने-पीने का सामान रखना न भूलें, क्योंकि रास्ते में सुविधाएँ अपेक्षाकृत कम मिलती हैं। और यात्रा को यादगार बनाने के लिए "बन्ना रे बागान में झूला" तथा "लहरियो" जैसे राजस्थानी लोकगीतों का आनंद लेना भी न भूलें।

इस यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि किसी स्थान की वास्तविक सुंदरता केवल उसके स्मारकों में नहीं, बल्कि उसकी कहानियों, उसके लोगों और उसकी मिट्टी की खुशबू में बसती है। जैसलमेर और लोंगेवाला मेरे लिए केवल पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति और देशभक्ति का जीवंत अनुभव बन गए।

न मंज़िलों को न हम रहगुज़र को देखते हैं,
अजब सफ़र है कि बस हम-सफ़र को देखते हैं।

— अहमद फ़राज



सुनिता गोयल
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

ग्रिड आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता व डिजिटल ट्विन के माध्यम से विद्युत नेटवर्क का सुदृढ़ीकरण

प्रस्तावना

आज दुनिया एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ बिजली सिर्फ एक सुविधा नहीं, बल्कि हमारे जीवन की धड़कन बन चुकी है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक, हमारी लगभग हर गतिविधि किसी न किसी रूप में विद्युत ऊर्जा पर टिकी हुई है। भारत भी इस बदलाव का अपवाद नहीं है। बढ़ती आबादी, तेज़ी से फैलते शहर, इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ता रुझान और नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार—इन सबने मिलकर हमारी पुरानी विद्युत व्यवस्था पर एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है: क्या यह ढांचा आने वाले कल की माँग को संभाल पाएगा? इसी सवाल का जवाब हमें ग्रिड आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल ट्विन जैसी तकनीकों में मिलता है—ये केवल तकनीकी शब्द नहीं, बल्कि हमारे ऊर्जा भविष्य को नई दिशा देने वाले साधन हैं।

ग्रिड आधुनिकीकरण की ज़रूरत क्यों?

कल्पना कीजिए—पहले बिजली एक ही रास्ते पर चलती थी: बड़े बिजलीघरों से बनकर सीधे हमारे घरों तक। लेकिन आज हर घर की छत पर लगा सोलर पैनल भी बिजली बना रहा है, पवन चक्कियाँ भी योगदान दे रही हैं, और बैटरियों में ऊर्जा जमा भी हो रही है। यानी बिजली अब एक तरफ नहीं, बल्कि कई दिशाओं में बह रही है। ऐसे में पुराने ग्रिड का आधुनिकीकरण अब समय की माँग बन गया है, जिसका मकसद है:

- बिजली आपूर्ति को इतना भरोसेमंद बनाना कि उपभोक्ता को कटौती की चिंता ही न रहे।
- तकनीकी और वाणिज्यिक हानियों को कम करके संसाधनों का सही उपयोग करना।
- सौर और पवन जैसी हरित ऊर्जा को ग्रिड में आसानी से जोड़ना और व्यवधानों को न्यूनतम करना।
- ऊर्जा दक्षता बढ़ाकर उपभोक्ताओं को बेहतर अनुभव देना।

डिजिटलीकरण—ग्रिड को स्मार्ट बनाने की कुंजी

अगर आधुनिक ग्रिड को एक शरीर मानें, तो डिजिटलीकरण उसका तंत्रिका तंत्र है। स्मार्ट मीटर, सेंसर, IoT, SCADA और एडवांस्ड मीटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी तकनीकों की मदद से अब हम हर पल की जानकारी वास्तविक समय में जान सकते हैं। इसके व्यावहारिक फायदे हैं:

- रियल-टाइम निगरानी और आँकड़ों के आधार पर तेज़, सही फैसले।
- बेहतर उपभोक्ता सेवा—सटीक बिलिंग और खपत की पारदर्शी जानकारी।

- आउटेज प्रबंधन—किसी भी रुकावट की तुरंत पहचान और समाधान।
- स्वचालन के कारण मानवीय हस्तक्षेप और परिचालन लागत, दोनों में कमी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)—ग्रिड को समझदार बनाती तकनीक

अगर डिजिटलीकरण ग्रिड को आँखें और कान देता है, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसे सोचने-समझने की शक्ति देती है। एआई बड़ी मात्रा में आँकड़ों को पढ़कर वह काम पलक झपकते कर सकती है जो किसी इंसान के लिए घंटों का होता। इसके प्रमुख योगदान:

- पूर्वानुमान आधारित रखरखाव: कौन-सा ट्रांसफॉर्मर या लाइन जल्द खराब हो सकती है, एआई पहले ही बता देती है—नुकसान होने से पहले ही मरम्मत।
- माँग का पूर्वानुमान: मौसम, पुराने आँकड़े और उपभोक्ता आदतों से किस दिन कितनी बिजली चाहिए, इसका सटीक अनुमान।
- ग्रिड स्थिरता प्रबंधन: वोल्टेज उतार-चढ़ाव या ओवरलोडिंग को पहचानकर तुरंत हल सुझाना।
- नवीकरणीय ऊर्जा का संतुलन: सौर-पवन की अनिश्चितता को पहले से भाँपकर ग्रिड संतुलन बनाए रखना।

डिजिटल ट्विन—नेटवर्क का आभासी हमशक्ल

डिजिटल ट्विन किसी भौतिक प्रणाली या पूरे ग्रिड का एक जीवंत डिजिटल प्रतिरूप है, जो वास्तविक समय के आँकड़ों के साथ लगातार अपडेट होता रहता है। इसके प्रमुख लाभ:

- बेहतर योजना और डिज़ाइन: नई परियोजना को ज़मीन पर उतारने से पहले डिजिटल दुनिया में जोखिम-रहित परीक्षण।
- जोखिम प्रबंधन: संभावित खराबी या आपदा का असर पहले से परखकर तैयारी।
- संचालन दक्षता में वृद्धि और समस्याओं की समय रहते पहचान से रखरखाव लागत व अनियोजित बंदी में कमी।

भारत के लिए सुनहरे अवसर

भारत इस दिशा में पीछे नहीं है—स्मार्ट ग्रिड मिशन, स्मार्ट मीटरिंग कार्यक्रम, हरित ऊर्जा गलियारा और ऊर्जा क्षेत्र के डिजिटल परिवर्तन जैसे कई कदम उठाए जा चुके हैं। तेज़ी से बढ़ती नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को देखते हुए इन तकनीकों को अपनाकर हम वितरण कंपनियों की कार्यक्षमता बढ़ा सकते हैं, लाइन हानियों पर लगाम लगा सकते हैं, उपभोक्ताओं को निर्बाध बिजली दे सकते हैं, ऊर्जा संक्रमण को रफ़्तार दे सकते हैं और कार्बन उत्सर्जन कम करके एक स्वच्छ भविष्य की नींव रख सकते हैं।

निष्कर्ष

सच कहें तो ग्रिड आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल ट्विन केवल तकनीकें नहीं, बल्कि हमारे ऊर्जा भविष्य के मजबूत स्तंभ हैं। ये विद्युत नेटवर्क को मरोसेमंद व कुशल बनाने के साथ-साथ हरित ऊर्जा को अपनाने, खर्च घटाने और उपभोक्ताओं का जीवन आसान बनाने का रास्ता खोलती हैं। भारत जैसे तेज़ी से आगे बढ़ते देश के लिए इन नवाचारों को गले लगाना अब चुनाव नहीं, बल्कि ज़रूरत है—क्योंकि यही रास्ता हमें ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक प्रगति और एक टिकाऊ कल की ओर ले जाएगा।

****



साहिल मोगरा
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

मिशन लाइफ : पर्यावरण संरक्षण की ओर एक जन-आंदोलन

प्रस्तावना

आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। इन समस्याओं का समाधान केवल सरकारों या बड़े उद्योगों के प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। इसी सोच को साकार करने के लिए भारत ने **"मिशन लाइफ"** की शुरुआत की। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाकर उनके दैनिक जीवन में ऐसे छोटे-छोटे बदलाव लाना है, जो प्रकृति की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दें।



मिशन लाइफ क्या है?

मिशन लाइफ का अर्थ है **"पर्यावरण के लिए जीवनशैली"** इसकी शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई और इसे वैश्विक स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से आगे बढ़ाया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य लोगों को **"उपयोग करो और फेंको"** की संस्कृति से हटाकर **"सोच-समझकर उपभोग करो"** की ओर प्रेरित करना है।

मिशन लाइफ के प्रमुख उद्देश्य

1. पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाना।
2. प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित और जिम्मेदार उपयोग करना।
3. ऊर्जा एवं जल की बचत को बढ़ावा देना।
4. प्लास्टिक प्रदूषण को कम करना।
5. स्वच्छ और हरित जीवनशैली को अपनाना।
6. आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित करना।

मिशन लाइफ का महत्व

आज पृथ्वी पर बढ़ता तापमान, ग्लेशियरों का पिघलना, वायु प्रदूषण और जैव विविधता का ह्रास मानव जीवन के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी दैनिक आदतों में छोटे-छोटे परिवर्तन करे, तो इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। मिशन लाइफ इसी सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश देता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार का नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है।

हम मिशन लाइफ में कैसे योगदान दे सकते हैं?

- पानी का आवश्यकतानुसार ही उपयोग करें।
- बिजली की बचत करें और अनावश्यक उपकरण बंद रखें।
- एकल-उपयोग (Single-use) प्लास्टिक का प्रयोग कम करें।
- कपड़े या जूट के थैले का उपयोग करें।
- अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ और उनकी देखभाल करें।
- सार्वजनिक परिवहन, साइकिल या पैदल चलने को प्राथमिकता दें।
- कचरे को अलग-अलग श्रेणियों में बाँटकर पुनर्चक्रण (Recycling) को बढ़ावा दें।
- स्थानीय और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों का उपयोग करें।

विद्यार्थियों की भूमिका

विद्यार्थी समाज में परिवर्तन लाने की सबसे बड़ी शक्ति हैं। वे अपने विद्यालय, परिवार और मित्रों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर सकते हैं। जल एवं ऊर्जा की बचत, स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण तथा प्लास्टिक-मुक्त परिसर जैसे प्रयासों के माध्यम से वे मिशन लाइफ को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

मिशन लाइफ केवल एक सरकारी अभियान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी का प्रतीक है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में पर्यावरण-अनुकूल आदतें अपनाए, तो एक स्वच्छ, हरित और टिकाऊ भविष्य का निर्माण संभव है। आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि प्रकृति की रक्षा करेंगे, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करेंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर पृथ्वी छोड़ेंगे। **"छोटे-छोटे प्रयास, बड़ा परिवर्तन"**—यही मिशन लाइफ का मूल संदेश है।

****



शुभम सिंह
उप प्रबंधक (परियोजना)

दिखावों से परे जीवन

जीवन की भागदौड़ में हम अक्सर अपने आसपास की चकाचौंध और रोशनी में इतने खो जाते हैं कि अपने सच्चे स्वरूप को ही भूल बैठते हैं। अपनी इस कविता के माध्यम से मैं हर किसी को उस स्व की याद दिलाना चाहता हूँ, जो कहीं भीतर ही कहीं छिपा हुआ है। आइए, इस कविता के सहारे हम उस आदर्श और प्रिय स्थान की ओर चलें, जिसे हम कहीं पीछे छोड़ आए हैं।

है एक जीवन इन दिखावों से परे ,

एक नील गगन इस चमक के पार भी।

हैं कुछ झिलमिलाते टिमटिमाते तारे,

सामाजिक चक्षुओं से ओझल,

अलौकिक लोक में।

नहीं हैं दीवारें वहाँ फर्श और अर्श के बीच।

प्रतिबंधित नहीं है जहाँ खुलकर हंसना, बोलना, ठहाके लगाना।

बंजर नहीं है जहाँ भावनाओं की धरती।

मिल जाऊँगा मैं तुम्हे वहाँ ,

कभी न बिछड़ने के लिए।

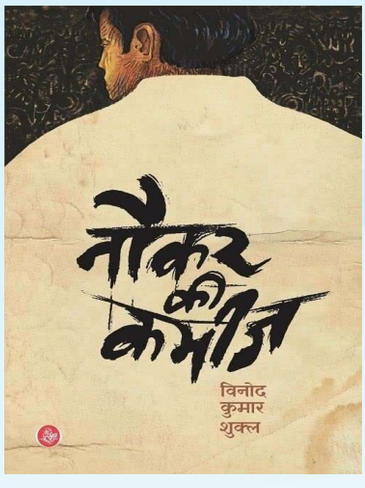
है एक जीवन जहाँ इन दिखावों से परे ,

एक नील गगन इस चमक के पार।



रोहित कुमार साव
उप प्रबंधक (राजभाषा)

नौकर की कमीज



नौकर की कमीज विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित भारतीय जीवन के यथार्थ और एक सामान्य आदमी की कशमकश को प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास की सबसे बडी खासियत यह है कि इसके पात्र मायावी नहीं बल्कि दुनियावी हैं, जिनमें कल्पना और यथार्थ के स्वर एक साथ पिरोए हुए हैं। यह उपन्यास समाज के संपन्न और वंचित वर्गों के बीच विद्यमान सामाजिक और आर्थिक विषमताओं को उजागर करते हुए निम्नवर्गीय लोगों के संघर्षमय जीवन, उनकी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जारी जद्दोजहद तथा उनके साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार और सामाजिक शोषण को मार्मिकता से सामने लाता है। इसकी परिस्थितियाँ और पात्र इतने वास्तविक प्रतीत होते हैं कि पाठक स्वयं को उनसे जुड़ा हुआ महसूस करता है। इसके अतिरिक्त, इस उपन्यास में समाज की रूढ़िवादी मानसिकता, नौकरशाही की जटिलताओं, बढ़ती महंगाई और अहसानफरामोशी जैसी प्रवृत्तियों पर तीखा प्रहार करता है। विनोद कुमार शुक्ल अपनी विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली और छोटे-छोटे किंतु प्रभावशाली वाक्यों के माध्यम से ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं, जो पाठक को निरंतर चिंतन के लिए प्रेरित करता है।

इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र संतू बाबू है जो निम्न मध्यमवर्गीय परिवार से आते है। वे एक ऐसे दुनियावी पात्र है जो घटनाओं को रचते नहीं बल्कि उनसे जूझने के लिए विवश है और साथ ही इस सोसाइटी के हाथों इस्तेमाल होने के लिए भी। वे पेशे से सरकारी नौकर (क्लर्क) है पर उन्हें जो वेतन मिलता है उसमें बहुत मुश्किल से अपनी इच्छाओं को पूरा कर पाते थे। इसका उदाहरण हमें उपन्यास में जगह-जगह देखने को मिल जाता है। वे साधारण सस्ती कमीज-पतलून पहनते थे पर उनके अंदर अच्छी फैशन की उन्हें समझ थी। अख़बारों और विज्ञापनों के माध्यम से वे उन वस्तुओं और सुविधाओं से परिचित होते हैं, जिनका वास्तविक अनुभव प्राप्त करना उनके लिए संभव नहीं है। अपनी आर्थिक स्थिति और वेतन-निर्भर जीवन की विडंबना को व्यक्त करते हुए संतू बाबू कहते हैं- ***मेरा वेतन एक कठघरा था, जिसे तोड़ना मेरे बस में नहीं था। यह कठघरा मुझमें कमीज की तरह फिट था और मैं अपनी पूरी ताकत से कमजोर होने की हद तक अपना वेतन पा रहा था। इस कठघरे में सुराख कर मैं सिनेमा देखता था, या स्वप्न।***

उपन्यास में महँगाई की भयावहता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है- ***अकालू और मँहगू जैसे नाम टोटके के लिए भी रखे जाते थे ताकि बुरा समय उस पर उतना बुरा प्रभाव न डाल पाए।*** मंहगाई से केवल गरीब एवं मजदूर वर्ग ही त्रस्त नहीं है पर संतू बाबू जैसे सामान्य सरकारी कर्मचारी भी है। पर यह मंहगाई संतू बाबू के दैनिक जीवन में उसका प्रभाव इतने मामूली तरीके से असर डालता था कि उन्हें विद्रोह करने की इच्छा नहीं होती थी। पर जब बरसात के समय उनके पास मिट्टी का तेल खरीदने के लिए पैसे नहीं होते तो वे गहरी सोच में पड़ जाते है क्योंकि मिट्टी का तेल उनके लिए केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से जुड़ा साधन है। इसके माध्यम से वे अंधकार में प्रकाश प्राप्त करते हैं, भोजन बनाते हैं, कंदील जलाते हैं और अख़बार पढ़ते हैं। संतू बाबू का जीवन उनकी आर्थिक हैसियत द्वारा नियंत्रित होता है। वे स्वयं स्वीकार करते हैं- ***इस किराये के मकान में मैं अपने पैरों से चलकर आया, पर यह जगह मेरी हैसियत से तय हुई। मैं जहां जाऊँगा, अपनी हैसियत से जाउँगा।*** जब वह बरसात के समय टपकती हुई छत की मरम्मत के लिए तीन दिन की धूप का ताक में रहते है, ऑफिस में, घर में हर जगह यही बात उनके ख्यालों में आती रहती है तो अंत में कुछ न कर पाने के कारण विवश होकर कहते है, कि ***धूप और बादल की परेशानी में पड़ा हुआ दुनिया में अभी केवल मैं ही हूँ।*** वे आर्थिक रुप से इतने सक्षम नहीं है कि वे अपने स्वंय के घर में रहे। इस कमी को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है- ***खुद के मकान से दुनिया देखने का सुख मेरे पास भी नहीं है।*** आगे जब किसी जरूरतमंद की आर्थिक मदद नहीं कर पाते तो अपनी विवशता को इस प्रकार व्यक्त करते है- ***खर्च पूरा न बैठने के कारण दया और उदारता कम हो जाती है, यह बात समझ में जल्दी आती थी। उदरता और दया का सीधा-सादा संबंध रुपये से है। सिर पर हाथ फिरा देना न तो उदारता होती है, न दया। बस, सिर में हाथ फिराना होता है।***

इस उपन्यास में नौकरों के जीवन को काफी करीब से दिखाया गया है और उनकी समाजिक स्थिति का वर्णन और उनसे जुड़े विभिन्न पहलुओं का जगह-जगह बारिक वर्णन किया गया है। नौकर केवल श्रम करने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह उस वर्ग का प्रतिनिधि है जो सामाजिक पदानुक्रम में निम्न स्थान पर होने के कारण निरंतर नियंत्रण, उपेक्षा और शोषण का शिकार होता है। लेखक विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से यह दिखाते हैं कि समाज में नौकरों की उपयोगिता को तो स्वीकार किया जाता है, किंतु उसकी स्वतंत्र पहचान, मानवीय गरिमा और अधिकारों को प्रायः उपेक्षित कर दिया जाता है। नौकर की उपयोगिता को उसकी मनुष्यता से अधिक महत्त्व दिया जाता है। उससे प्रश्न करने के बजाय आदेश मानने, अधिकार माँगने के बजाय विनम्र रहने और अपनी आकांक्षाओं को दबाए रखने की अपेक्षा की जाती है।

नौकरों के प्रति प्रभुत्वशाली वर्ग के व्यवहार को लेखक इस कथन के माध्यम से रेखांकित करते हैं कि ***"नौकरों से पूछना कम चाहिए, बताना ज्यादा चाहिए। बताने के बाद पूछताछ होनी चाहिए कि जो बताया गया था, वह ठीक से पूरा हुआ या नहीं।"***

उपन्यास में 'कमीज' स्वयं एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक के रूप में उपस्थित होती है। लेखक लिखते हैं, ***"यदि कमीज आदर्श नौकर का साँचा था तो नाम, मँहगू, भी एक अच्छे नौकर का साँचा है।"*** यहाँ कमीज केवल वस्त्र नहीं, बल्कि उस सामाजिक पहचान का प्रतीक है जो नौकर वर्ग पर आरोपित कर दी जाती है। व्यक्ति की निजी पहचान और व्यक्तित्व गौण हो जाते हैं तथा वह एक निश्चित सामाजिक भूमिका में सीमित कर दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त, लेखक सामाजिक संबंधों में व्याप्त अहसान और आश्रितता की अवधारणा की भी आलोचनात्मक समीक्षा करते हैं। ***"उनका अहसान हमेशा भारी होगा। काम करके अहसान उतारा जाता तो वे लोग कुली और मजदूरों तक के अहसानमंद हो गए होते।"*** यह कथन इस तथ्य को उजागर करता है कि श्रमिक वर्ग का परिश्रम अक्सर अदृश्य बना दिया जाता है, जबकि प्रभुत्वशाली वर्ग द्वारा किए गए छोटे-से उपकार को भी स्थायी अहसान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस प्रकार इस उपन्यास में नौकर का चित्रण एक व्यक्ति अथवा पेशे का चित्रण न रहकर सामाजिक अधीनता का रूपक बन जाता है। मँहगू जैसे घरेलू नौकर और संतू बाबू जैसे निम्न-मध्यवर्गीय सरकारी कर्मचारी की स्थितियाँ अलग दिखाई देने के बावजूद सत्ता-संरचना के स्तर पर एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। दोनों की स्वतंत्रता सीमित है और दोनों से व्यवस्था द्वारा निर्धारित भूमिका के अनुरूप व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। नौकर की कमीज सामाजिक विषमता के साथ-साथ मनुष्य की अस्मिता, स्वतंत्रता और गरिमा से जुड़े प्रश्नों को भी गंभीरता से उठाता है।



निखिल
उप प्रबंधक (परियोजना)

चांदनी चौक और मेरी सहेली

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर हर तरफ पहरों में बंधी चांदनी चौक की गलियों में आम तौर पर काफी चहल-पहल रहती है। ऐसे ही एक साधारण दिन पर मैं और मेरी सहेली निकल पड़े कुछ नया अनुभव करने। लाल क़िला मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर 1 से बाहर निकलते ही दिल्ली की आबोहवा महसूस होने लगी। अभी दस कदम ही चले थे कि जैनियों का दिगंबर जैन मंदिर सामने नज़र आया। मंदिर के ऊपर लहराते जैन झंडे जिनमें कई रंगों का समावेश था, दूर से अपनी और सबकी नज़रें आकर्षित करते थे। अभी जैन मंदिर से आगे बस बढ़े ही थे कि गौरी शंकर मंदिर के द्वार का रास्ता नज़र आ गया। यूं तो चांदनी चौक में आने का मेरा मक़सद बस अपनी चटोरी जीभ को तृप्त करना था, पर मैंने अपनी सहेली की बात मान कर हम हाथ-पांव धो कर मंदिर के अंदर चले गए। सच बताऊं तो बहुत अच्छा किया। मंदिर की खूबसूरती देखते ही बनती थी, मुख्य द्वार से सीढ़ियों पर चढ़ते हुए, सामने शिव-शक्ति के दर्शन पाए। वहां बैठे पुजारी ने हम दोनों के माथे पर तिलक लगाया और प्रसाद दिया। मेरी सहेली को तो प्रसाद में फूल भी मिला। फिर हम दोनों आगे बढ़े और अन्य देवी-देवताओं को देखा, अंत में वहां बनी 12 ज्योतिर्लिंगों के समक्ष अपना माथा झुकाने के बाद हम मंदिर से बाहर की ओर आए। बाहर आकर अपने जूते पहने और फिर हम अपने अगले पड़ाव की ओर बढ़े। थोड़ा आगे पैदल चले तो मधुर भजन-कीर्तन की आवाज़ कानों में पड़ी, ध्यान दिया तो देखा कि हम शीशगंज गुरुद्वारा के सामने आ पहुंचे हैं। गुरुद्वारे के ठीक सामने चौक पर एक स्मारक बना हुआ था, और ठीक उसके बगल में एक म्यूज़ियम भी। ये स्मारक वही जगह थी जहां मुग़ल राजा औरंगज़ेब ने 9वें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर जी का शीश काट दिया था। वहां के एक सेवादार से पता चला कि इस गुरुद्वारे को ठीक उसी जगह निर्माण किया गया जहां पर गुरु का शीश कटने के बाद गिरा था। हम दोनों ने अपना शीश झुका कर उस स्मारक पर गुरु को नमन किया।

गुरुद्वारे के सामने वाली सड़क पर नज़र फेरी तो वहां कुछ दुकानें खुली हुई नज़र आईं, मैंने अपनी सहेली की ओर देखा, जो अपनी शरारत भरी नज़रों से मुझे पहले से ही देख रही थी। मानो हमने इशारों-इशारों में ही उन दुकानों की तरफ जाने के लिए एक-दूसरे से पूछ भी लिया और एक-दूसरे को हाँ भी कर दी। फिर हम दोनों जाकर रुके सीधा एक सरदार जी की दुकान पर जहां से क्या ग़ज़ब की खुशबू आ रही थी। हमने एक प्लेट जलेबी-रबड़ी लगाने को कहा, तो सरदार जी बोले, "पुत्तर जी ये जलेबी नहीं जलेबा है"। हम दोनों ने कुछ कहा नहीं, बस मुस्कुरा दिए। पर जब वो प्लेट हमारे हाथों में आई तब पता चला कि जलेबी के इतने ज़्यादा बड़े टुकड़े को सच में ही "जलेबा" कहा जाना चाहिए। जैसे-जैसे हम दोनों जलेबा को तोड़कर उस पर रबड़ी लगा कर खा रहे थे, मानो मेरी चटोरी जीभ मुझे चिल्ला-चिल्ला कर "धन्यवाद" कह रही हो। वाकई में वो बेहद स्वादिष्ट और शानदार जलेबा-रबड़ी थी।

उससे थोड़ा और आगे चले, तो हल्दीराम्स वाली तरफ की सड़क पर, एक शाही कपड़े और ज़ेवर की दुकान के बाहर एक छोटी सी चलती-फिरती टपरी पर एक आदमी सैंडविच बना रहा था। देखने में काफी अच्छे दिख रहे थे वो सैंडविच। इस बार मैंने अपनी सहेली का हाथ पकड़ा और सैंडविच वाले की टपरी पर रुक गया। टपरी के एक तरफ लिखा था "बॉम्बे सैंडविच", हमने सैंडविच की एक प्लेट लगाने को कहा और इंतज़ार करने लगे। इतने में प्लेट तैयार हो रही थी, हमने चांदनी चौक की भीड़-भाड़ से नज़रें थोड़ा ऊपर उठा कर देखा तो वास्तुकला की अलग-अलग कृतियां वहां की इमारतों में नज़र आ रही थी। इमारतों को निहार कर अपना इतिहास का आकलन करने ही वाले थे कि सैंडविच तैयार होकर हमारे सामने आ गया। जलेबा की मिठास के बाद मुंह में ऐसा हल्का-फुल्का सैंडविच बहुत अच्छा लग रहा था। टपरी वाले को यूपीआई से पैसे देने के बाद हम दोनों परांठे वाली गली की तरफ चल दिए।

वैसे तो मेरा मन बस आज अपनी चटोरी जीभ को तृप्त करने का था, पर बीच-बीच में हम दोनों ही रंग-बिरंगे कपड़ों पर भी नज़र फेरते हुए चल रहे थे। इसी बीच मेरी सहेली को झुमके पसंद आ गए। झुमके खरीद लिए, और मैंने अपनी चुलबुली नज़रों से अपनी सहेली को देखा, मानो मैं आग्रह कर रहा हूं कि "क्या मैं तुम्हें ये झुमके पहना सकता हूं?"। जब सहेली ने थोड़ी देर तक कोई जवाब नहीं दिया और बस मुझे झूठ-मूठ के गुस्से से देखती रही, तब मैं थोड़ा घबराया। पर फिर उसने अपनी गर्दन हिला कर, और पलकें झुका कर "हां" कहा, मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। जलेबा-रबड़ी से ज़्यादा अच्छा अनुभव हो रहा था मुझे उस वक़्त। फिर मैंने अपना हाथ बढ़ाया और झुमका अपनी सहेली के कान पर पहनाने लगा।

झुमका बस उसके कान से लटक कर उसके गाल को छूने ही वाला था कि मम्मी ने ज़ोर से मेरे सर पर चपत लगाई और मुझे नींद से जगा दिया। क्या यार मम्मी, थोड़ी देर और सोने देती!

****



उत्कर्ष विनय

उप प्रबंधक (मानव संसाधन)

श्वेत क्रांति से हरित ऊर्जा की ओर

"ऑपरेशन फ्लड" — नाम सुनने में ही कितना प्रभावशाली लगता है, है न?

वास्तव में, यह था भी।

भारत में श्वेत क्रांति कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में हुए सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक है। इसका उद्देश्य दुग्ध उत्पादन बढ़ाना, किसानों की आय में वृद्धि करना तथा देश को दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना था। वर्ष 1970 में प्रारंभ किए गए *"ऑपरेशन फ्लड"* ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लेकिन श्वेत क्रांति की विरासत केवल दूध उत्पादन तक सीमित नहीं है। आज यही दुग्ध एवं पशुपालन आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था हरित ऊर्जा की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। पशुओं से प्राप्त गोबर, जिसे अक्सर अपशिष्ट समझा जाता है, वास्तव में ऊर्जा का एक उपयोगी स्रोत है। गोबर से बायोगैस का उत्पादन किया जा सकता है, जिसका उपयोग खाना पकाने, बिजली उत्पादन और अन्य घरेलू आवश्यकताओं के लिए किया जा सकता है। बायोगैस संयंत्र से निकलने वाला अवशेष एक उपयोगी जैविक खाद के रूप में खेतों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, डेयरी की सहकारी समितियाँ किसानों को सामूहिक रूप से बायोगैस, सौर ऊर्जा और अपशिष्ट प्रबंधन जैसी तकनीकों को अपनाने में सहायता कर सकती हैं। इससे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम होगी, कार्बन उत्सर्जन घटेगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था अधिक परिपक्व एवं टिकाऊ बनेगी।

इस प्रकार, एक ही संसाधन से ऊर्जा, खाद और अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है तथा ग्रामीण क्षेत्रों को अधिक ऊर्जा-सक्षम और टिकाऊ बना सकता है।

इस दृष्टि से, श्वेत क्रांति केवल दूध की कहानी नहीं है; यह ग्रामीण समृद्धि से सतत विकास और हरित ऊर्जा की ओर बढ़ने का एक अवसर भी है। यदि पशुपालन, कृषि और नवीकरणीय ऊर्जा को एकीकृत किया जाए, तो भारत के गाँव भविष्य की स्वच्छ और आत्मनिर्भर ऊर्जा व्यवस्था के महत्वपूर्ण केंद्र बन सकते हैं।



अधीश श्रीवास्तव

उप प्रबंधक (मानव संसाधन)

लगे रहना....

जीवन में अक्सर हम सोचते हैं कि किसी भी चीज़ को पाना बहुत कठिन है। इसी सोच के कारण हम जोखिम लेने से डरते हैं। हमें लगता है—"अगर मैं असफल हो गया तो?", "लोग क्या कहेंगे?" लेकिन इस डर का सबसे बड़ा परिणाम यह होता है कि हमारी ज़िंदगी आगे बढ़ने के बजाय कहीं न कहीं रुक जाती है। हम चाहते तो हैं कि हम विराट कोहली बन जाएँ, लेकिन क्या हम उतनी मेहनत, उतना समय और उतनी निरंतरता देने के लिए तैयार हैं? अक्सर जवाब होता है—नहीं। क्योंकि हमारे मन में परिणाम का डर, लोगों की बातों का डर और असफलता का डर बैठा होता है। लेकिन दोस्तों, ज़िंदगी हमेशा हमें दूसरा मौका देती है। बस आवश्यकता है अपनी जोखिम लेने की क्षमता विकसित करने की। क्योंकि बिना जोखिम उठाए हम कभी वहाँ तक नहीं पहुँच सकते, जहाँ हम अपने आप को अपने दिन में देखे गए सपनों में देखते हैं।

तो फिर करना क्या होगा?

इसका एक बहुत आसान रास्ता है—अपने लक्ष्य को बड़ा कीजिए। अपने जीवन के उस उद्देश्य को पहचानिए जिसे आप केवल अपने विकास के लिए नहीं, बल्कि समाज के विकास में योगदान देने के लिए हासिल करना चाहते हैं। जब लक्ष्य बड़ा होता है, तो रास्ते की छोटी-छोटी परेशानियाँ छोटी लगने लगती हैं।फिर उस लक्ष्य के पीछे पूरी शिद्दत से लग जाइए।

लेकिन एक बात हमेशा याद रखिए—लक्ष्य हासिल करने से मिलने वाली खुशी बहुत थोड़े समय की होती है, लेकिन उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए किए गए प्रयासों से मिलने वाला संतोष कहीं अधिक गहरा होता है। शायद इसी कारण कई बुद्धिजीवी कहते हैं कि हमें लक्ष्य आधारित नहीं, बल्कि प्रक्रिया आधारित होना चाहिए। आप जो भी काम करें, उसमें अपनी पूरी जान लगा दीजिए। अपनी पूरी क्षमता झोंक दीजिए। हो सकता है कि आपको सफलता न मिले, लेकिन जब आप रात को सोने जाएँगे और आपको पता होगा कि आपने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी, तो वह प्रयास आपको बहुत अच्छी नींद देगा। क्योंकि असफलता का दुख उतना बड़ा नहीं होता, जितना यह पछतावा कि "काश मैंने कोशिश की होती।"

दूसरों से नहीं, अपने से मुकाबला कीजिए

जीवन में हमें एक और चीज़ सीखनी होगी—दूसरों से प्रतियोगिता करना बंद करना। आपकी असली प्रतियोगिता किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं, बल्कि आपके अपने पिछले संस्करण से है। हर दिन खुद को कल से थोड़ा बेहतर बनाइए। कल से थोड़ा अधिक सीखिए, थोड़ा अधिक मेहनत कीजिए और थोड़ा बेहतर इंसान बनने का प्रयास कीजिए। और एक बात जो सफल लोगों को

दूसरों से अलग करती है—वे केवल Competition पर नहीं, बल्कि Collaboration पर विश्वास करते हैं। वे दूसरों को पीछे खींचने के बजाय दूसरों को आगे बढ़ाने में विश्वास करते हैं। शायद यही कारण है कि वे जहाँ भी जाते हैं, जो भी काम करते हैं, उसमें एक अलग ही गुणवत्ता दिखाई देती है। इसलिए जीवन में समाज को देने की आदत डालिए।

ज्ञान है तो बाँटिए।
समय है तो दीजिए।
सामर्थ्य है तो किसी का सहारा बनिए।
अवसर मिला है तो किसी और के लिए अवसर पैदा कीजिए।

क्योंकि जीवन का एक बड़ा सत्य है—

जब आप देना सीख जाते हैं, तो जीवन भी आपको बहुत कुछ लौटाना शुरू कर देता है।और अंत में...अगर जीवन में सचमुच खुश रहना है, तो बड़ा सोचिए, पूरे मन से अपने काम के पीछे लग जाइए और हर दिन ईमानदारी से प्रयास कीजिए।हो सकता है कि परिणाम आपके अनुसार न आए। हो सकता है कि कुछ लोग आपको समझ न पाएँ।लेकिन याद रखिए—आपकी कहानी का फैसला आपके निरंतर प्रयासों से होगा।

इसलिए डरिए मत।
बड़ा सपना देखिए।
जोखिम उठाइए।
पूरी शिद्दत से मेहनत कीजिए।
दूसरों को आगे बढ़ाइए।
और अपने कल से बेहतर बनने की कोशिश कीजिए।
वक्त आपका भी आएगा, दोस्तों।

जावेद अख़्तर साहब ने ख़ूब कहा है—"क्यों डरें ज़िन्दगी में क्या होगा कुछ ना होगा तो तज़रूबा होगा" और शायद जीवन का असली अर्थ भी यही है—कोशिश करते रहना, सीखते रहना और आगे बढ़ते रहना।

जय हिंद! जय भारत!



सौम्य सौरव दास
उप प्रबंधक (विधि)

भारत में नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण: अवसर, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा



भारत तेजी से बढ़ती ऊर्जा मांग और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए देश ने 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। सौर, पवन, जलविद्युत और बायोमास जैसे स्रोत इस परिवर्तन के केंद्र में हैं। हालांकि, इतने बड़े स्तर पर नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार के लिए विशाल निवेश की आवश्यकता है, जिसे केवल घरेलू संसाधनों से पूरा करना संभव नहीं है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण भारत की स्वच्छ ऊर्जा यात्रा का महत्वपूर्ण आधार बन गया है।

अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण का महत्व

नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ पूंजी-गहन होती हैं। इनकी स्थापना के लिए प्रारंभिक चरण में बड़े निवेश की आवश्यकता पड़ती है, जबकि लाभ कई वर्षों में प्राप्त होता है। इसलिए दीर्घकालिक और कम लागत वाली पूंजी इनके लिए अत्यंत आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण में बहुपक्षीय विकास बैंक, जलवायु कोष, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI), ग्रीन बॉन्ड और निजी वैश्विक निवेशकों से प्राप्त ऋण, इक्विटी, अनुदान तथा गारंटी शामिल हैं। यह वित्तपोषण न केवल पूंजी उपलब्ध कराता है, बल्कि परियोजनाओं के जोखिम को भी कम करता है और नई तकनीकों तक पहुँच प्रदान करता है।

अंतरराष्ट्रीय वित्त के प्रमुख स्रोत

1. बहुपक्षीय विकास बैंक

विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम (IFC) और एशियाई विकास बैंक (ADB) जैसे संस्थान भारत के स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे वित्तीय सहायता के साथ-साथ तकनीकी परामर्श, परियोजना संरचना और जोखिम प्रबंधन में भी सहयोग प्रदान करते हैं।

उदाहरण के रूप में, विश्व बैंक ने भारत के रूफटॉप सोलर कार्यक्रम के लिए बड़े वित्तीय पैकेज को मंजूरी दी, जिसका उद्देश्य निजी क्षेत्र के निवेश को भी आकर्षित करना है।

2. जलवायु वित्त और रियायती ऋण

ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF) और क्लीन टेक्नोलॉजी फंड (CTF) जैसे वैश्विक जलवायु कोष नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को कम ब्याज दर पर वित्त उपलब्ध कराते हैं। इनका उपयोग अक्सर "ब्लेंडेड फाइनेंस" मॉडल में किया जाता है, जिसमें सार्वजनिक और निजी पूंजी को मिलाकर परियोजनाओं की वित्तीय व्यवहार्यता बढ़ाई जाती है।

यह मॉडल विशेष रूप से वितरित सौर ऊर्जा और औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए ऊर्जा परियोजनाओं में प्रभावी सिद्ध हो रहा है।

3. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI)

भारत ने ऊर्जा क्षेत्र में विदेशी निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बनाया है। विदेशी निवेशक सौर, पवन, ऊर्जा भंडारण और अन्य स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्रों में इक्विटी निवेश कर रहे हैं। इससे पूंजी के साथ-साथ आधुनिक तकनीक, प्रबंधन विशेषज्ञता तथा वैश्विक अनुभव भी प्राप्त होता है।

4. ग्रीन बॉन्ड

ग्रीन बॉन्ड नवीकरणीय ऊर्जा वित्तपोषण का एक तेजी से उभरता साधन है। इनके माध्यम से जुटाई गई राशि को पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं में निवेश किया जाता है। भारत द्वारा जारी किए गए सार्वभौमिक (Sovereign) ग्रीन बॉन्ड ने हरित वित्त बाजार को नई दिशा दी है और वैश्विक निवेशकों का विश्वास बढ़ाया है।

अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण के लाभ

अंतरराष्ट्रीय वित्त का सबसे बड़ा लाभ **पूंजी की उपलब्धता** है। बड़े सौर पार्क, पवन परियोजनाएँ, ऊर्जा भंडारण व्यवस्था और ट्रांसमिशन नेटवर्क के विकास के लिए यह महत्वपूर्ण स्रोत है।

दूसरा प्रमुख लाभ **कम लागत वाली पूंजी** है। रियायती ऋण और गारंटी परियोजनाओं की वित्तीय लागत को कम कर सकते हैं।

तीसरा लाभ **जोखिम-साझेदारी** है। मुद्रा विनिमय, ब्याज दरों, निर्माण देरी तथा भुगतान संबंधी जोखिमों को अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ विभिन्न वित्तीय साधनों के माध्यम से कम कर सकती हैं।

चौथा लाभ **तकनीकी हस्तांतरण** है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग से भारत को आधुनिक सौर प्रौद्योगिकी, ऊर्जा भंडारण समाधान, स्मार्ट ग्रिड और परियोजना प्रबंधन की उन्नत तकनीकों तक पहुँच प्राप्त होती है।

पाँचवाँ लाभ **निजी निवेश को प्रोत्साहन** है। अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक वित्त अक्सर निजी निवेशकों का विश्वास बढ़ाता है और अतिरिक्त पूंजी को आकर्षित करने में मदद करता है।

प्रमुख चुनौतियाँ

अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण के बावजूद कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

सबसे बड़ी चुनौती **ऑफ-टेकर जोखिम** है। कई बिजली वितरण कंपनियों (DISCOMs) की वित्तीय स्थिति कमजोर होने के कारण परियोजना डेवलपर्स को भुगतान में देरी का सामना करना पड़ता है, जिससे परियोजनाओं की नकदी प्रवाह क्षमता प्रभावित होती है।

दूसरी चुनौती **मुद्रा जोखिम** है। विदेशी मुद्रा में लिए गए ऋणों का भुगतान रुपये में होने वाली आय से किया जाता है। विनिमय दर में प्रतिकूल बदलाव वित्तीय बोझ बढ़ा सकते हैं।

तीसरी चुनौती **ट्रांसमिशन अवसंरचना** की कमी है। नवीकरणीय ऊर्जा की बढ़ती क्षमता को राष्ट्रीय ग्रिड से प्रभावी ढंग से जोड़ने के लिए मजबूत ट्रांसमिशन नेटवर्क आवश्यक है।

चौथी चुनौती **नीतिगत और नियामकीय अनिश्चितता** है। भूमि अधिग्रहण, पर्यावरणीय स्वीकृतियों, टैरिफ निर्धारण और राज्य स्तरीय नीतियों में बदलाव निवेशकों के लिए जोखिम बढ़ा सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय वित्त को अधिक प्रभावी बनाने के उपाय

भारत को दीर्घकालिक और स्थिर नीति वातावरण सुनिश्चित करना होगा। बिजली खरीद समझौतों को मजबूत बनाने तथा वितरण कंपनियों की वित्तीय स्थिति सुधारने की आवश्यकता है।

इसके साथ-साथ **ब्लेंडेड फाइनेंस मॉडल** को व्यापक स्तर पर अपनाया जाना चाहिए ताकि सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार की पूंजी का बेहतर उपयोग हो सके।

स्थानीय मुद्रा वित्तपोषण को बढ़ावा देने से विदेशी मुद्रा जोखिम कम होगा। इसके अलावा ग्रीन बॉन्ड, ट्रांजिशन बॉन्ड और अन्य हरित वित्तीय साधनों के बाजार का विस्तार भी आवश्यक है।

ऊर्जा भंडारण, स्मार्ट ग्रिड और ट्रांसमिशन अवसंरचना को भी अंतरराष्ट्रीय वित्त के प्राथमिक क्षेत्रों में शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि भविष्य की ऊर्जा प्रणाली इनके बिना सफल नहीं हो सकती।

भविष्य की संभावनाएँ

भारत वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा निवेश का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभर रहा है। आने वाले वर्षों में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ऊर्जा भंडारण, ग्रीन हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक वाहनों, ऑफशोर विंड तथा स्मार्ट ग्रिड जैसे क्षेत्रों में निवेश की अपार संभावनाएँ हैं।

देश की नीतिगत प्रतिबद्धता, विशाल बाजार, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन और बढ़ती ऊर्जा मांग अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को आकर्षित कर रही है। यदि नीति, वित्त और अवसंरचना के क्षेत्र में सुधार जारी रहता है, तो भारत वैश्विक ऊर्जा संक्रमण का अग्रणी उदाहरण बन सकता है।

निष्कर्ष

भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों की प्राप्ति में अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बहुपक्षीय विकास बैंक, जलवायु कोष, विदेशी निवेश, ग्रीन बॉन्ड और ब्लेंडेड फाइनेंस जैसे साधन स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं के लिए आवश्यक पूंजी उपलब्ध करा रहे हैं। साथ ही, ये तकनीकी सहयोग, जोखिम प्रबंधन और निजी निवेश आकर्षित करने में भी सहायक हैं।

हालाँकि, इस वित्त का अधिकतम लाभ तभी प्राप्त होगा जब वितरण कंपनियों की वित्तीय स्थिति मजबूत हो, ट्रांसमिशन अवसंरचना का विस्तार हो, मुद्रा जोखिमों का प्रबंधन किया जाए और नीतिगत स्थिरता सुनिश्चित की जाए। सही रणनीति के साथ अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण न केवल भारत को 2030 के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों तक पहुँचाने में मदद करेगा, बल्कि 2070 तक नेट-जीरो अर्थव्यवस्था की दिशा में भी एक मजबूत आधार प्रदान करेगा।

****



अनुष्का कुमारी
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

आज़ादी का जज़्बा: कल और आज



हर साल 15 अगस्त को जब तिरंगा शान से लहराता है, तो वह हमें उस आज़ादी की याद दिलाता है जो अनगिनत बलिदानों, संघर्षों और त्याग की लंबी यात्रा के बाद प्राप्त हुई थी। परंतु आज़ादी केवल इतिहास का एक गौरवपूर्ण अध्याय नहीं है; यह एक जीवंत चेतना है, जो समय के साथ विकसित होती रही है। प्रत्येक पीढ़ी ने इसे नए संदर्भों में समझा और नए आयाम दिए हैं। इसलिए आज यह प्रश्न पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है कि हमारे लिए आज़ादी का अर्थ क्या है। इसका उत्तर खोजने के लिए हमें अतीत की ओर भी देखना होगा और यह भी समझना होगा कि वर्तमान समय में स्वतंत्रता हमसे कौन-सी नई जिम्मेदारियों का निर्वहन चाहती है। यदि इसे स्वतंत्रता दिवस पर लेख, वार्षिक पत्रिका या संस्थागत प्रकाशन के स्तर का अधिक साहित्यिक, विचारोत्तेजक और प्रवाहपूर्ण बनाना हो, तो इसे इस प्रकार लिखा जा सकता है:

कल: मुक्ति के रूप में आज़ादी

1947 में आज़ादी केवल एक राजनीतिक घटना नहीं थी; वह करोड़ों भारतीयों की सामूहिक आकांक्षाओं का साकार रूप थी। उस पीढ़ी के लिए स्वतंत्रता का अर्थ था विदेशी शासन की बेड़ियों से मुक्ति, अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करने का अधिकार, और अपनी ही भूमि पर सम्मानपूर्वक सिर उठाकर जीने की गरिमा।

यह आज़ादी किसी एक दिन में प्राप्त नहीं हुई थी। इसके पीछे दशकों का संघर्ष, अनगिनत त्याग, असाधारण साहस और अटूट विश्वास था। देश के गाँवों और शहरों से लेकर जेलों की काल कोठरियों तक, असंख्य लोगों ने सत्याग्रह, असहयोग और अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से स्वतंत्रता की मशाल को जीवित रखा। अनेक लोगों ने अपने सपने, अपना सुख और यहाँ तक कि अपना जीवन भी मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया।

उस समय आज़ादी का स्वरूप मूलतः सामूहिक था। यह किसी एक व्यक्ति, वर्ग या समुदाय की नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की आकांक्षा थी। किसान और मजदूर, विद्यार्थी और शिक्षक, चिंतक और क्रांतिकारी, महिलाएँ और पुरुष, सभी एक साझा उद्देश्य से प्रेरित होकर आगे बढ़ रहे थे। स्वतंत्रता संग्राम ने भारत को यह अमूल्य शिक्षा दी कि जब विविधताओं से भरा समाज एक लक्ष्य के लिए संगठित हो जाता है, तब सबसे शक्तिशाली साम्राज्य भी उसकी इच्छाशक्ति के सामने टिक नहीं पाता।

आज: अवसर और सशक्तिकरण के रूप में आज़ादी

आज स्वतंत्रता का स्वरूप बदल चुका है। हम राजनीतिक रूप से स्वतंत्र राष्ट्र हैं, इसलिए आज़ादी का अर्थ केवल शासन परिवर्तन तक सीमित नहीं रह गया है। आज यह अवसरों के विस्तार, संभावनाओं के द्वार खोलने और अपनी क्षमता को पूर्ण रूप से विकसित करने की स्वतंत्रता का प्रतीक बन गई है।

आज का युवा अपनी पसंद का करियर चुन सकता है, अपने विचार खुलकर व्यक्त कर सकता है, अपनी पहचान गढ़ सकता है और अपने सपनों को साकार करने का प्रयास कर सकता है। यह उस युवा उद्यमी की आज़ादी है जो छोटे शहर से वैश्विक स्तर का स्टार्टअप खड़ा करता है; उस महिला की आज़ादी है जो नेतृत्व की नई ऊँचाइयों को छूती है; और उस छात्र की आज़ादी है जो डिजिटल साधनों के माध्यम से ज्ञान अर्जित कर अपने भविष्य की दिशा स्वयं निर्धारित करता है।

किन्तु आधुनिक स्वतंत्रता केवल अधिकारों का नाम नहीं है। इसमें गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और अवसरों की असमानता से मुक्ति भी शामिल है। यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं, तकनीकी उन्नति और आर्थिक आत्मनिर्भरता तक पहुँच का भी प्रश्न है। आज स्वतंत्रता हमसे यह नहीं पूछती कि "क्या हम स्वतंत्र हैं?", बल्कि यह पूछती है कि "क्या हम अपनी स्वतंत्रता का पूरा लाभ उठाने और दूसरों को भी उसका अवसर देने में सक्षम हैं?"

साझा सूत्र: ज़िम्मेदारी

समय बदला है, चुनौतियाँ बदली हैं और स्वतंत्रता के अर्थ भी विस्तृत हुए हैं, लेकिन एक मूल्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 1947 में था, और वह है **ज़िम्मेदारी**।

स्वतंत्रता सेनानियों ने केवल पराधीनता का अंत नहीं चाहा था; उन्होंने ऐसे भारत का स्वप्न देखा था जो न्यायपूर्ण, समतामूलक, प्रगतिशील और आत्मनिर्भर हो। उस स्वप्न को साकार करने की ज़िम्मेदारी आज हमारी है।

हमारी स्वतंत्रता का वास्तविक मूल्य तब सिद्ध होगा जब हम उसका उपयोग केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के व्यापक हित के लिए करेंगे। जब हम सशक्त संस्थाओं का निर्माण करेंगे, समान अवसरों को बढ़ावा देंगे, और ऐसा वातावरण बनाएँगे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सम्मान और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सके।

आखिरकार, आज़ादी कभी केवल बंधनों से मुक्ति नहीं रही; वह हमेशा किसी बड़े उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्धता का नाम रही है।

कार्यस्थल में आज़ादी का अर्थ

स्वतंत्रता की यह भावना हमारे कार्यस्थलों में भी दिखाई देती है। विचार रखने की स्वतंत्रता, नए प्रयोग करने का साहस, असफलताओं से सीखकर पुनः प्रयास करने का अवसर, और प्रतिभा के आधार पर आगे बढ़ने का विश्वास, ये सभी आधुनिक स्वतंत्रता के ही रूप हैं।

जो संस्थाएँ संवाद, नवाचार और सहभागिता को प्रोत्साहित करती हैं, वे केवल बेहतर संगठन ही नहीं बनातीं, बल्कि उन लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों को भी आगे बढ़ाती हैं जिनके लिए कभी स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष किया था। कार्यस्थल तब सबसे अधिक सशक्त बनता है जब लोग केवल निर्देशों का पालन नहीं करते, बल्कि विचारों और पहल के साथ योगदान देने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं।

निष्कर्ष

1947 में जिस स्वतंत्रता की ज्योति ने पूरे देश को आलोकित किया था, वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। अंतर केवल इतना है कि उसका स्वरूप समय के साथ विस्तृत और परिष्कृत हुआ है। आज वह हमारे निर्णयों, हमारी आकांक्षाओं, हमारे नवाचारों और हमारी सामाजिक जिम्मेदारियों में जीवित है।

इस स्वतंत्रता दिवस पर हमें केवल इतिहास को स्मरण करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उस भावना को अपने जीवन में पुनः जागृत करना चाहिए जिसने कभी एक राष्ट्र को एकजुट किया था। सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम स्वतंत्रता को केवल प्राप्त विरासत के रूप में नहीं, बल्कि एक सतत उत्तरदायित्व के रूप में देखें और साहस, एकता तथा उद्देश्य के साथ भविष्य की ओर आगे बढ़ें।

****

हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत आयोजित विविध गतिविधियों की सचित्र झलकियां





दिनांक 01.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत राजभाषा प्रभाग द्वारा सभी इरेडा कर्मियों हेतु हिंदी भाषा का कल, आज और कल विषय पर ऑनलाइन माध्यम से हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रुप में डॉ ओम प्रकाश, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय से उपस्थित हुए और संबंधित विषय पर अपना मार्गदर्शन प्रदान किया।





दिनांक 02.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत इरेडा के हिंदीत्तर भाषी कर्मियों के लिए समाचार वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में श्री विष्णु कुमार विश्नोई, अधिकारी (राजभाषा) इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली से उपस्थित थे।






दिनांक 03.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत हिंदी वर्ग पहेली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।




दिनांक 07.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री जे. के. मंडल, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-I (दिल्ली) निर्णायक के रूप में उपस्थित रहें।




दिनांक 08.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में डॉ मीनाक्षी रानी, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स, उपस्थित रहीं।





दिनांक 09.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत राजभाषा एवं व्यवहारिक हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।





दिनांक 10.09.2026 को हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत अंत्याक्षरी प्रतियोगिता (हिंदी दोहे,पद्य, कविता, लोकगीत आदि) का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में श्री अनिरुद्ध कुमार, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य), दिल्ली को आमंत्रित किया गया।

इरेडा में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम





इरेडा के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ बिजय कुमार महान्ती ने ऑनलाइन माध्यम से सभी इरेडा कर्मियों को स्वच्छता की शपथ दिलाकर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम की शुरुआत की।





स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत छात्रों के बीच स्वच्छता संबंधी जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से दीवान चंद आर्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में पोस्टर निर्माण, प्रश्नोत्तरी एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्रीमती माला घोष चौधुरी, सुश्री दुर्रे शाहवार और श्री के पी फिलिप ने अन्य इरेडा कर्मियों एवं शिक्षको की उपस्थिति में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया।





स्वच्छता ही सेवा अभियान के अन्तर्गत इरेडा ने सफाईकर्मियों, हाउसकीपिंग स्टाफ और सुरक्षा कर्मियों के लिए निवारक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया। इस शिविर से 100 से अधिक कर्मी लाभान्वित हुए।

हिंदी पखवाड़ा 2026 के पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां





*प्रथम तिमाही 2026-27 बनाम प्रथम तिमाही 2025-26

कर पश्चात लाभ*
₹337 करोड़
बढ़ोतरी **37**%

ऋण पुस्तिका*
₹94,936 करोड़
बढ़ोतरी **19**%

परिचालन से राजस्व*
₹2,250 करोड़
बढ़ोतरी **15**%

निवल मूल्य*
₹14,133 करोड़
बढ़ोतरी **14**%

30 जून 2026 को समाप्त तिमाही के लिए अलेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों (एकल और समेकित) का सार

(₹ करोड़ में)

क्र. सं.	विवरण	एकल				समेकित			
		समाप्त तिमाही			समाप्त वर्ष	समाप्त तिमाही			समाप्त वर्ष
		30.06.2026 (अलेखापरीक्षित)	31.03.2026 (लेखापरीक्षित)	30.06.2025 (लेखापरीक्षित)	31.03.2026 (लेखापरीक्षित)	30.06.2026 (अलेखापरीक्षित)	31.03.2026 (लेखापरीक्षित)	30.06.2025 (लेखापरीक्षित)	31.03.2026 (लेखापरीक्षित)
1.	परिचालन से कुल आय	2,249.54	2,180.90	1,959.53	8,337.48	2,250.60	2,181.28	1,959.84	8,338.89
2.	अवधि के लिए निवल लाभ/(हानि) (कर, अपवादिय और/या असाधारण मदों से पहले)	412.72	619.26	304.63	2,336.92	413.75	619.14	304.84	2,337.58
3.	कर से पहले की अवधि के लिए निवल लाभ/(हानि) (अपवादिय और/या असाधारण मदों के बाद)	412.72	619.26	304.63	2,336.92	413.75	619.14	304.84	2,337.58
4.	कर के बाद की अवधि के लिए निवल लाभ/(हानि) (अपवादिय और/या असाधारण मदों के बाद)	337.50	492.75	246.68	1,873.34	338.53	492.62	246.88	1,874.00
5.	इस अवधि के लिए कुल व्यापक आय [जिसमें इस अवधि का लाभ/(हानि) (कर के बाद) और अन्य व्यापक आय (कर के बाद) शामिल हैं]	277.65	577.74	265.37	1,993.46	278.30	579.20	266.21	1,997.15
6.	भुगतान की गई इक्विटी शेयर पूंजी (₹10/– प्रत्येक का अंकित मूल्य)	2,809.23	2,809.23	2,809.23	2,809.23	2,809.23	2,809.23	2,809.23	2,809.23
7.	अन्य इक्विटी	11,323.27	10,972.12	9,592.63	10,972.12	11,327.96	10,976.19	9,593.20	10,976.19
8.	प्रतिभूति प्रीमियम खाता (निवल)	2,737.56	2,737.56	2,737.57	2,737.56	2,737.56			
9.	निवल मूल्य	14,132.50	13,781.35	12,401.86	13,781.35	14,137.19			
10.	चुकता ऋण पूंजी/बकाया ऋण	79,002.01	77,845.63	66,398.32	77,845.63	79,058.77			
11.	ऋण इक्विटी अनुपात	5.59	5.65	5.35	5.65	5.59			
12.	प्रति शेयर आय (₹10/– प्रत्येक) (जारी और बंद किए गए परिचालन के लिए)								
	क. मूल	1.20	1.76	0.91	6.73	1.21	1.76	0.91	6.73
	ख. डायल्यूटिड	1.20	1.76	0.91	6.73	1.21	1.76	0.91	6.73
13.	डिबेंचर रिडेम्पशन रिजर्व	-	-	439.01	-	-	-	439.01	-

टिप्पणियां:

क) उपरोक्त परिणामों को 03.08.2026 को हुई अपनी बैठक में निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित किया गया है और कंपनी के संयुक्त सांविधिक लेखा परीक्षकों द्वारा सीमित समीक्षा के अधीन हैं।

ख) उपरोक्त सेबी एलओडीआर विनियमों के विनियम 33 और 52 के तहत स्टॉक एक्सचेंजों के साथ दाखिल त्रैमासिक वित्तीय परिणामों के विस्तृत प्रारूप का एक अंश है। उक्त वित्तीय परिणामों का पूर्ण प्रारूप कंपनी की वेबसाइट www.ireda.in/financial-results और स्टॉक एक्सचेंजों की वेबसाइटों www.bseindia.com और www.nseindia.com पर उपलब्ध है।

ग) सेबी एलओडीआर विनियमों के विनियम 52(4) में निर्दिष्ट अन्य लाइन मदों के लिए, स्टॉक एक्सचेंजों को प्रासंगिक प्रकटन किए गए हैं और इन्हें क्रमश www.bseindia.com और www.nseindia.com पर एक्सेस किया जा सकता है।

कृते निदेशक मंडल एवं उनकी ओर से
हस्ता/–
डॉ. बी. के. महान्ती
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)
निदेशक (वित्त)
डीआईएन संख्या: 08816532

दिनांक: 03.08.2026
स्थान: नई दिल्ली

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

पंजीकृत कार्यालय: पहली मंजिल, कोर–4ए, ईस्ट कोर्ट, भारत पर्यावास केंद्र, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003, **फोन:** 011–24682206–19, **फैक्स:** 011–24682202
कॉर्पोरेट कार्यालय: तीसरी मंजिल, अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066, **फोन:** 011–26717400–12, **फैक्स:** 011–26717416
व्यवसाय केंद्र: एनबीसीसी ऑफिस कॉम्प्लेक्स, ऑफिस ब्लॉक नंबर II, प्लेट बी, सातवीं मंजिल, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, **फोन:** 011–24347729–99
वेबसाइट: www.ireda.in | **सीआईएन:** L65100DL1987GOI027265

वित्तीय परिणाम देखने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

हमें फॉलो करें: IREDALtd | IREDALimited | iredaofficial | IREDA Ltd. | IREDALtd